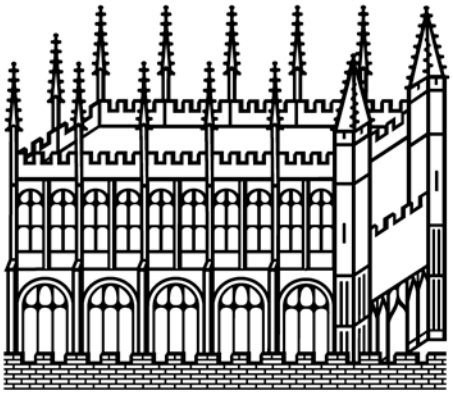

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13. C. 53. Hindi Sabh 2

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Sabhāvilāsa.

Shabha Vilas



सभाविलास

بسابلاس

अर्थात्

जिस में अनेक कवियों के रचित नाना

प्रकार के छन्द लिखे हैं

छठवीं बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छापी गई

मई सन् १८८२ ई०

सभाविलास

सोरठा

विघनहरण गणराय मूषक वाहन गजवदन
गणपति चरण मनाय तबै काज कछु कीजिये १॥

दोहा

आनन भावत स्वाद भूमि परो गह्यो सु मलिन्द । कृपा चरण अर-
विन्द को पियत सदा मकरन्द ॥२॥ ममता भ्रमता के मिटे उपजे सम
ता ज्ञान । रसेजु रमता रामसों यमता गहै न मान ॥ ३ ॥ साधिस-
क्यो नतु साधु संग लायन सक्यो समाध । विषय बियाद उपा-
धि तज हरि पल आध अराध ॥ ४ ॥ निगमरु गीता ने कह्यो प
रम पुनीता नाम । बीत्यो जन्म जु जातहै भजले सीता राम ॥५॥
मनकी मिटै मलीनता होय लीनता साथ । नीकी यही ग्रबीरा-
ता भजिले दीना नाथ ॥ ६ ॥ जिन पायो हरि रस परम मिटै भर-
म भय दोय । गह्यो धर्म अप कर्म तजि मान परम गत होय ॥७॥
सुखकारण तारण तरण बारण लयो उबार । कंस पछारन।
मान हरि निरधारण आधार ॥ ८ ॥ काम क्रोध लागी सुरत।
वहै अभागी जान । हरि अनुरागी जासु मति सो बड़ भागी मा-
न ॥ ९ ॥ सुख दायक भायक भगत उपजायक आनन्द । ती-
न लोक नायक जपो अघ नायक ब्रजचंद ॥ १० ॥ पौरी पद
निर्व्वान की यहै ज्ञान की गाथ । आज्ञा बेद पुराण की जपो जा-
नकी नाथ ॥ ११ ॥ जपैं गणेश सुरेश से औ महेश सुरव आप।
आनंद देश कि देशमें हृषीकेश के जाप ॥ १२ ॥ घने बाज
गजराज हैं सुखके सने समाज । बने ठने किहि काज हैं जोन
हेत ब्रजराज ॥ १३ ॥ उपजावन आनंद उर पतित सु पावन ।
राम । आवन जावन जात मिट जपबावन को नाम ॥ १४ ॥

जो लौं घट में स्वास है होय रहौ हरि दास। पूरै आशा निराशा की बासुदेव उरवास ॥१५॥ मान सुराड माली कह्यो नरक कुराड नहिं जाय। कोट झुराड पापीतरे पुराडरीक गुरा गाय ॥१६॥

अथदृष्टान्त

भाव सरस समुझत सबै भले लगै यह भाय। जैसे औसर की कहीबानी सुनत सुहाय ॥ १७ ॥ नीकी पै फीकी लगै बिन अवसर की बात। जैसे बरषात युद्ध में रसशिंगार न सुहात ॥ १८ ॥ फीकी पै नीकी लगै कहिये समय बिचार। सबके मन हर्षित करै ज्यों बिवाह में गार ॥१९॥ जाही तें कछु पाइये करिये ताकी आस। रीते सर घर पै गये कैसे बुझत पियास ॥ २० ॥ स्वाति बूंद है सधन में चातक मरत पियास। जो जाही को है रहै सो तिहि पूरै आस ॥ २१ ॥ भले बुरे सब एकसे जौलौं बोलत नाहिं। जान परत है काक पिक ऋतु बसंत के माहिं ॥ २२ ॥ मधुर बचन ते जात मिटि उत्तम जन अभिमान। तनक शीत जलसों मिटै जैसे दूध उफान ॥ २३ ॥ सबै सहायक सबल के कोई न निबल सहाय। पवन जगावत आगको दीपहिं देत बुझाय ॥ २४ ॥ कछु बसाय नहिं सबलसों करै निबल सों जोर। चलै न अचल उखार तरु डारत पवन झकोर ॥ २५ ॥ जो जाही सों रचि रह्यो तिहि ताही सों काम। जैसे किरवा आक को कहा करै बस आम ॥२६॥ प्रकृति मिले सन मिलतहै अन मिलते न मिलाय। दूध दही ते जमतहै कांजी सें फट जाय ॥ २७ ॥ पर घर कबहु न जाइये गये घटतहै ज्योति। रवि मराडल में जात शशि छीन कला छबि होति ॥ २८ ॥ ब्रह्म बनाये बन रहे ते फिर और बनैन। कान कहत नाहिं बैन जो जीभ सुनत नहिं बैन ॥ २९ ॥ सूरख गुरा समुझै नहीं तौ न गुरा में चूक। कहा भयो दिन को बिभो देखै जो न उलूक ॥ ३० ॥ मूढ़ तहांही मानिये जहां न पंडित होय। दीपक की रवि के उदय बात न बूझै कोय ॥ ३१ ॥ निपट अबुध समझै कहा बुध जन बचन बिलास। कबहूं भेक न जानहीं अमल कमल की बास ॥ ३२ ॥ सांच झूठ निर्णय करै नीति निपुरा जो होय। राज

हंस बिन को करै क्षीर नीर को दोय ।। ३३ ।। दोषहि को उमहै ग-
है गुण न गहै खल लोक। पिये रुधिर पय ना पिये लगी पयो
धर जोंक ।। ३४ ।। कारज धीरे होत है काहे होत अधीर । समय
पाय तरिवर फरैं केतिक सींचो नीर ।। ३५ ।। क्यों कीजै ऐसो य-
तन जाते काज न होय । परबन पै खोदै कुवां कैसे निकसे तोय
।। ३६ ।। जो चाहै सोई करै बड़े अशंकित अंग । सबके देखत नग-
न हर धरत गौरि अरधंग ।। ३७ ।। बड़े सहजही बातसों रीझ देत
बकशीश । तुलसी दलते बिष्णु ज्यों आक धतूरे ईश ।। ३८ ।।
सुधरी बिगरै बेगही बिगरी फिर सुधरै न । दूध फटै कांजी परे सो
फिर दूध बनै न ।। ३९ ।। छोटे नरते रहत हैं शोभा युत शिर ताज ।
निरमल राखै चांदनी जैसे पायंदाज ।। ४० ।। सहज रसीलो होय
सो करै अहित पर हेत । जैसे पीड़ित कीजिये ईख तऊ रस देत ।।
४१ ।। कबहुं कुसंग न कीजिये किये प्रकृति की हानि । गूंगे
को समझाय बो गूंगे की गति आनि ।। ४२ ।। कहा करे कोऊ यत-
न प्रकृति और की और । बिष मारै ज्यावै सुधा उपजे एकहि ठौ-
र ।। ४३ ।। डरै न काहू दुष्ट सों जाहि प्रेम की बान । भौंर न छोड़ै
केत की तीखे कंटक जान ।। ४४ ।। धन बाढ़े मन बढ़ गयो नाहि-
न मन घट होय । जो जल संग बाढ़ै जलज जल घट घटै न सोय
।। ४५ ।। सबते लघु है मांगबो याभे फेर न सार । बलिपै यांच-
तही भये बावन कर करतार ।। ४६ ।। सबै एकसे होत नहिं हो-
त सबन में फेर । कपरा खादी बाफतौ लोह तवा समशेर ४७
जैसे की सेवा करै तैसी आशापूर । रत्नाकर सेवे रतन सर सेवे
शालूर ।। ४८ ।। होत सुसंगति सहज सुख दुख कुसंग के थान ।
गंधी और लुहार की बैठे देख दुकान ।। ४९ ।। ठौर छुटे तें मीत हू ह्वै
अमीत सत रात । रबि जल उखरे कमल को जारत गारत जात ।।
५० ।। जात गुणी जातन तहां आडम्बर युत सोय । पहुंचै चंग ।
अकाशलों जो गुण संयुत होय ।। ५१ ।। गुण वालो सम्पत्ति लहै ।
लहै न गुण बिन कोय । काढ़ै नीर पताल ते जो गुण युत घट ही-
य ।। ५२ ।। अरि छोटो गिनिये महीं जाते होत बिगार । तृण ससूह

कोछिनक में जारत तनक अंगार ॥ ५३ ॥ परिडत जनको भ्रम मरम जानत जे मति धीर । कबहुं बांकन जानहीं तन प्रस्तुत की पीर॥ ५४ ॥ बीर पराक्रम ना करै तासों डरत न कोय । बालक हूकी चित्रकै बाघ बिदारौ होय ॥ ५५ ॥ नृप प्रतापते देशमें रहै दुष्ट नहिं कोय । प्रगटै तेज दिनेश को तहां तिमिर नहिं होय ॥ ५६ ॥ कारज ताही को सरै करै जो समय निहार । कबहुंन हारै खेलजो खेलै दांव बिचार ॥ ५७ ॥ कोऊ दूर न करसकै उदै बिधिके अंक । उदधि पिता तउ चंद्रको धोय न सक्यो कलंक ॥ ५८ ॥ गाहक सदै सपूतके सारै काज सपूत । सबको ढम्य नहोतहै जैसे बनको सूत ॥ ५९ ॥ करत करत अभ्यास के जड़ मति होत सुजान । रसरी आवत जातते सिलपर परत निशान ॥ ६० ॥ को सुख को दुख देत है देत कर्म झकझोर । उरझै सुरझै आपही बाजा पवन के जोर ॥ ६१ ॥ भली करत लागे बिलम्ब बिलम्ब न बुरे बिचार । भवन बनावत दिन लगै ढाहत लगै न बार ॥ ६२ ॥ सोई अपनो आपनो रहै निरंतर साथ । होत पराया आपनो अपने पराये हाथ ॥ ६३ ॥ कहरक में कहरोक में अरिसों जिन पतियाय । जैसे शीतल तप्त जल डारत अग्नि बुझाय ॥ ६४ ॥ अंतर अंगुरी चार को सांच झूठ में होय । मन मानै देखी कही सुनी न मानै कोय ॥ ६५ ॥ होय भले के सुत बुरो भलो बुरे के होय । दीपक सों काजल प्रगट कमल कीचसों जोय ॥ ६६ ॥ होय भले चाकरन ते भलो धनी को काम । ज्यों अंगद हनुमान ते सीता पाई राम ॥ ६७ ॥ सुखद सज्जन के मिलन को दुर्जन मिलो मलाय । जानै ऊख मिठास को ॥ जब सुरस मीज चबाय ॥ ६८ ॥ जाहि मिले सुख होतहै तिहि बिछुरे दुख होय । सूर्य्य उदय फूलें कमल ताबिनु मुकुचै सोय ॥ ६९ ॥ ढूंढे ढूंढ़ियेयतन करत बिगरै नाहिं । कपट पुरुष धन खेत पर देखत मृग फिर जाहिं ॥ ७० ॥ कारज सोई सुधरिहै जो कीजिये समभाय । मतिचूके दरके दिना दीनों कातयत कुंभिलाय ॥ ७१ ॥ रहै प्रजा धन यत्न सों तहं करौ तरवार । सो फल कोउ न लै सकै नहीं कटीली डार ॥ ७२ ॥ परिडत भ्रूरु बनिता लता शोणित चाम

पाय । है माणिक्य बहु मोलको हेम जटित छवि छाय ॥ ७३ ॥ अपनी प्रभुता को सबै बोलत झूंठ बनाय । वेश्या बरष घटावही योगी वरष बढ़ाय ॥ ७४ ॥ कहूं कहूं गुरा दोषते उपजत दुःख शरीर । मधुरी बानी बोलके परत पींजरा कीर ॥ ७५ ॥ भलेबुरे निबहैं सबै महत पुरुष के संग । चंद्र सर्य जल अग्नियें बसत शंभुके अंग ७६॥ बिना कहेहू सत पुरुष परकी पूरै आश । कौन कहत है सूर्य्य को घरश करत प्रकाश ॥ ७७ ॥ कछु कहि नीच न छेड़िये भलो न वाको संग । पाथर डारे कीचमें उछलि बिगारै अंग ॥ ७८ ॥ मीठी खाटी बस्तु नहिं मीठी जाकी चाह । अमिली मिसरी छाड़िके आफू खात सराह ॥ ७९ ॥ खाय न खरचै मुढ़ मन चोर सकल लेजाय । पीछे ज्यों मधु मक्षिका हाथ मलै पछिताय ॥ ८० ॥ उत्तम विद्या लीजिये यदपि नीच पै होय । परो अपावन ठौरमें कंचन तजत न कोय ॥ ८१ ॥ जानि बूझ अजुगत करै तासों कहा बसाय । जागतही सोवत रहै ताको कहा जगाय ॥ ८२ ॥ सज्जन बचावै कष्टते रहै निरंतर साथ । नैन सहाई ज्यों पलक देह सहाई हाथ ॥ ८३ ॥ अरिके करमें दीजिये अवसर को अधिकार । ज्यों ज्यों दूब्य लुटाइ है त्यों त्यों यश बिस्तार ८४॥ बुद्धिवान गंभीर को संगत लागत नाहिं । ज्यों चंदन ढिग अहि रहत विष न होय तिहि माहिं ॥ ८५ ॥ सज्जन को दुरबहू दिये दुरजनहू आस । जैसे चंदन को घिसे सुंदर देत सुबास ॥ ८६ ॥ सज्जन चित कबहु न धरत दुर्जन जनके बोल । पाहन मारे आमको तउ फल देत अमोल ॥ ८७ ॥ बिरले नर परिहत गुरागी बिरले बूझन हार । दुरख खराडन बिरले पुरुष जे उत्तम संसार ॥ ८८ ॥ जो करतार बड़े किये मग पग धरत बिचार । दुरजनहूं सों मिल चलैं बोलैं रोस निवार ॥ ८९ ॥ जाहि बड़ाई चाहिये तजै न उत्तम साथ । ज्यों पलास संग। पानके पहुंचै राजा हाथ ॥ ९० ॥ बचन पारखी होहिहू पहिले आपन भारख । अन पूंछे नहिं भाखिये यही सीख जिय राख ॥ ९१ ॥ सुखरु अवरा दृग नासिका सबही के इक ठौर । कहबो सुनबो देखबो चतुरन को कछु और ॥ ९२ ॥ इक कामिन अरु कवि बचन दोऊ रसको ठौर । बेधक को मन बेधई बे कामिन कवि और ९३॥

जो तू चाहै अधिक रस सीख ईख की लेय। जो तोसों अनरस करै ताहि अधिक रस देय॥ ९५॥ नर की अरु नल नीर की गति एकै करि जोय। ज्यों ज्यों नीचो ह्वै चलै त्यों त्यों ऊंचो होय॥ ९५॥

अथ परवानो

कैसे निबहै निबल जन करि सबलन सों गैर। जैसे बस सागर बिषय करत मगर सों बैर॥ ९६॥ अपनी पहुंच बिचार कै करतब करिये दौर। तेते पांव पसारिये जेती लांबी सौर॥ ९७॥ पिशुन छुल्यो नर सुजन सो करत बिश्वास न चूक। जैसे राह्यो दूध को पीवत छांछहि फूंक॥ ९८॥ फेरन ह्वै है कपट सों जो कीजै व्योपार। जैसे हांड़ी काठ की चढ़ै न दूजी बार॥ ९९॥ करिये सुख को होत दुख यह कहु कौन सयान। बा सोने को जारिये जासों फाटै कान॥१००॥ भले बुरे जहं एक से तहां न बसिये जाय। ज्यों अन्याय पुरमें बिकै शक्कर गुड़ एकै भाय॥१०१॥ भाव भाव की सिद्धि है भाव भाव में भेव। जो माने तो देव है नहीं भीत को ढेव॥१०२॥ अति अनीत लहिये नधन जो प्यारे मन होय। पाये सोने की छुरी पेट न मारै कोय॥१०३॥ सूरख को पोथी दई बांचन को गुरा गाथ। जैसे निरमल आरसी दई आंधरे हाथ॥१०४॥ अति हठ मत करहठ बढ़े बात न करिहै कोय। ज्यों ज्यों भीजै कामरी त्यों त्यों भारी होय॥१०५॥ लालचहू ऐसो भलो जासों पूजै आस। चाटतहू कहुं ओस के बुझत काहु की प्यास॥१०६॥ जैसे गुरा दीनो दई तैसो रूप निबन्ध। ये दोऊ कहं पाइये। सोनो और सुगंध॥१०७॥ प्रेम निबाहन कठिन है समुझ कीजियो कोय। भंग भरवन है सुगम पै लहर कठिन हीं होय॥१०८॥ एक वस्तु गुरा होत है भिन्न प्रकृति के भाय। भटा एक को पित्त करै करत एक को बाय॥१०९॥ बिन स्वारथ कैसे सहैं कोऊ करुवे बैन। लातखाय चुप कारिये जु होय दुधारू धेन॥११०॥ करै बुराई सुख चहै कैसे पावै कोय। रोपै पेड़ बबूल को आम कहां ते होय॥१११॥ होय बुराई ते बुरो यह कीनो निरधार। खात खनैगो और को ताको कूप तयार॥११२॥ एक भेष के आसरे जाति बरण छिप जात। ज्यों हाथी के पांव में सबको पांव समात॥११३॥ कनक न जोरे

मन जुरे खाते निबरे सोय । बूंद बूंद सों घट भरे टपकत बीते तोय ॥११४॥ श्रमहीं सों सब मिलतहै बिन श्रम मिलै न काहि । सीधी अंगुरी घी जम्यौ क्योंहूं निकरै नाहिं ॥११५॥ होत न कारज सोबिना यहै कहौ सो अयान । जहां न कुक्कुट शब्द तहं होत न कहो बिहान ॥११६॥ यहीबात सबही कहैं राजा करै सो न्याव । ज्यों चौपड़ के खेल में पांसो परे सो दांव ॥११७॥ परको अवगुण देखिये अपनी दृष्टि न होय । करे उजेरो दीपयै तरे अंधेरो जोय ॥११८॥ अपनी अपनी ठौर पर सबको लागे दाव । जलमें गाड़ी नाव पर । थल गाड़ी पर नाव ॥११९॥ सुख दिखाय दुख दीजिये खल सों लरिये काहि । जो गुड़ दीनेही मरत क्यों बिष दीजै ताहि ॥१२० अन पूछेही जानिये मूढ़ देख मन माहिं । छलके ओछे नीर घट पूरे छलके नाहिं ॥१२१॥ बिनसत बार न लागही ओछे जनकी प्रीति । अम्बर डम्बर सांझके ज्यों बालूकी भीति ॥१२२॥ कुल सपूत । जान्यो परै खल सब लक्षण गात । होनहार बिरवान के होत चीकने पात ॥१२३॥ जो धनवंत सुदेय कछु देय कहा धनहीन । कहा निचोरै नग्न जल न्हाय सरोवर नीर ॥१२४॥ होत निबाह न आपनो लीने फिरै समाज । चूहा बिल न समातहै पूंछ बांधिये छाज ॥१२५॥ बिना प्रयोजन भूलिहू ठठिये नाहीं ठाट । जानों नहिं जानगर को ताकी पूँछ न बाट ॥१२६॥ इंगित औ आकारतें जान लेत जे भेंट । तासों बात दुरै नहीं ज्यों दाई सों पेट ॥१२७॥ आप कहै नाहि न करै दाता कोहै हेत । आप न जावे सासुरे और न को सिख देत ॥१२८॥ जो कहिये सो कीजिये पहिले कर निरधार । पानी पी घर पूँछनौ नाहक भलौ बिचार ॥१२९॥ पाछे । कारज कीजिये पहले यतन बिचार । बड़े कहत हैं बांधिये पानी पहले पार ॥१३०॥ ठीक किये बिन और की बात सांच तमथपी हाथ अंधेरी रैन में परी जेवरी सर्प ॥१३१॥ झूंठ बिना फीकी लगे अधिक झूँठ दुख भौन । झूँठ तितोही बोलिये ज्यों आटे में लौन ॥१३२॥ ठौर देख के हूजिये कुटिल सरल गति आप । बाहर टेढ़ो फिरतहै बांबी सूधो सांप ॥१३३॥ दोऊ चाहैं मिलन कौ तौ

मिलाप निरधार। कबहूं नाहिन बाजिहै सकहाथ ते तार ॥१३४॥ आपै कारज आप नो करत कुसंगत साथ। पांय कुल्हारी देत हैं सूरख अपने हाथ ॥१३५॥ ताही को करिये यतन रहिये जाकी ओर। कौन बैठ के डारपर काटे सोई डार ॥१३६॥ परतछनी के देखिये कहबरनो कोउ ताहि। कर कंकन की आरसी कोदेखत है चाहि ॥१३७॥ आये आदर ना करै जात रहै पछताय। आयो नागन पूजिये बांबी पूजन जाय ॥१३८॥ निबल सबल के पक्षते सबलन सों अनरबात। देत हिमायत की गधी एराकीके लात ॥१३९॥ बहुत द्रव्य संचय जहां चोर राज भय होय। कांसेऊपर बीजरी परत कहत सब कोय ॥१४०॥ ओछे नरके पेटमें रहैन मोटी बात। आध सेर के पात्र में कैसे सेर समात ॥१४१॥ तरसेहूय रसे नहीं नौढ़ा रहत उदास। जोसर खूखा भादवें किसी उन्हाले आस ॥१४२॥ हिलन मिलन चितवन मिटी बय बीते करतूत। योगी थासोका गया आसन रही भभूत ॥१४३॥ मिलन चले आये बहुरि नउ न रही तिय चिंत। कांधे डाली कामली योगी कादो भिंत ॥१४५॥ तजिकै सुंदर चतुर पिय विरभे अनत बसाय। कूकर चौक बढ़ावुये चाकी चाटन जाय ॥१४५॥ निरखि घात पिय सौतिसब रही प्रीति हित हार। लेयपरोसन भौंपरी नितउठ करती रार ॥१४६॥ बय रीते गाते मति बाह बिन पिय रिझावन की बाक। धोबी बेटा चाँदमा सीटी और पटाक ॥१४७॥ रूठ्यो पिय सौतिन मिल्यो सखिवहि रिझवत कर मान। ना बस चलत कुम्हार सों खरके मेरति कान ॥१४८॥ पिय। चितवन पठई सखी रही बैठ सुखलेय। चारों कुतिगां मिलगई पहरोकाको देय ॥१४९॥ सब सुखवन्द पिय हित करै तऊन रह तिय नीति। भुसऊपर को लीपनो अरु बालू की भीति ॥१५०॥ पिय औरै चितबन चलन धरतिय सोंनहिं लेस। जैसे कंता घर रहे तैसे गये बिदेस ॥१५१॥ बयबीते आये रमन अबन लहत चितचाय। बीत्यो ब्याह कुम्हारको मांड़ालैलै जाय ॥१५२॥ पीव परोसिन सों रहत तियन कहत डर काज। अपनी आंधउघारिये आपहि मरिये लाज ॥१५३॥ सौतिन कोउ बयमें गयी पियतें भयो वियोग। जिहिंघर जितो बधावनो।

तिहि पर तितनो सोग ॥ १५४ ॥ तिय बैठी मनसकुच कै पिय आये नहिं चाय । सूने घरको पाहुनौ ज्यों आवैं त्यों जाय ॥ १५५ ॥ सुख बिलसै जोबन समय फिर पछतावत बाल । गई बास बोदार की रही खालकी खाल ॥ १५६ ॥ सौतिलरी पियपै गई बहै रह्यो रिसपाग । घरकी दाद्यौवन गई वनमें लागी आग ॥ १५७ ॥ पाय पलोटत द्वै तिया द्वै तिय सोवत साथ । इक द्वैद्वै अरु चीकनी पुनि लाजू दोउ हाथ ॥ १५८ ॥ पिय आये योवन बिते बहुरों चले बिदेश । दोनों खोई जांगना मुद्रा अरु आबेश ॥ १५९ ॥ अद्भुत हित प्रीतम प्रिया सौतिन जानत सार । काजर सब कोउ देतहै चितवन माहिं बिचार ॥ १६० ॥ नौढ़ा प्रौढ़ा सों कहत हों जानत रस घात । कूआमेकी मेड़की कहै समुद्र की बात १६१ सौति आज टोना कियो हौंन कहोंगी सोय । हमतौ दुरयो प्यारने को कहि बैरी होय ॥ १६२ ॥ सौति बात मीठी कहत सेऊ सौति सतराय सौगाहासू औ पढ़ै अन्न बिलाई खाय ॥ १६३ ॥ आलि लई संग टहल को करन लगी रसरास । गाड़र आनी ऊंनकों बैठी चरै कपास ॥ १६४ ॥ सौति प्रीति जोरत रहै दुलहिन देत उठाय । अंधो बाटैं जेवरी पाछे बकरी खाय ॥ १६५ ॥ योवन लौं तिय रस रमी बीते भयो बियोग । कोल्हू सों खल ऊतरी भई पलीता योग ॥ १६६ ॥ मानमनाये बिन कहत आव खेल हंस बोल । बनिक हाट बैठ न नदे कह झुक को सों तोल ॥ १६७ ॥ नौढ़ा सौं अति रति करी सो न कहत रत चाव । मोजामें के घाव को पाँजाने कै राव ॥ १६८ ॥ अधिक मानते तिय तजी पिय न मिलै हित जोड़ । बन जारे की आग ज्यों गयो बलंती छोड़ ॥ १६९ ॥ सुचनायक सुच तिय रमें असुच न हिये समाय । कै हंसा मोती चुगै कै लंघन रहजाय ॥ १७० ॥ कबहुं न रस कै कुच गहै रिस कै गहे न केश । जैसे कंथा घर रहे तैसे गये बिदेश ॥ १७१ ॥

अथप्रेम

भूत लगे मदिरा पिये सब काहू सुध होय । प्रेम सुधारस जिन पियो तिन न रहै सुध कोय ॥ १७२ ॥ अद्भुत पैंड़ो प्रेम को न्याय कहत सब कोय । नयननि सों नयना मिलैं घाव करेजी होय ॥ १७३ ॥ जे घट बिरह अवां अगिन पर पक भये सुनाय । तिनही घट में नंद

भनि प्रेम अमी ठहराय ॥ १७४ ॥ जब बिछुरततब होत दुख मिलिकै हियो सिराय । याही में रस है भये प्रेम कह्यो क्योंजाय ॥ १७५ ॥ जब लग मन के बीच कछु स्वारथ को रस होय । सुद्ध सुवा कैसे कहै परै बीच में नोय ॥ १७६ ॥ मन मतंग मद रस मत्यो धर्यो प्रेम रन धाय । लोक बेद कुलकान की दई सैन बिचलाय ॥ १७७ ॥ नीको बिरह समीपतें जामें मिलन की आस । कहिये भलो संयोग क्या जानें बिछुरन बास ॥ १७८ ॥ प्रीति न टूटै अनमिले उत्तम। मन की लाग । सौ युग पानी में रहै मिटै न चकमक आग ॥ १७९ ॥

अथनेत्र

अमी हलाहल मदभरे श्वेत श्याम रतनार । जियत मरत झुक झुक परत जिह चितवत इक बार ॥ १८० ॥ दौरत काहू और के थकै न कोऊ और । मेरे दृग पै थक रहैं देखत पिय दृग दौर ॥ १८१ ॥ प्यारो दृग अंजन दिये यह लूक जन होय । आय हिये मन लेगई देख सक्यो नहिं कोय ॥ १८२ ॥ नयन सलोने अधर मधु कह रहीम घट कौन । मीठो भावे लोन पर मीठेहू पर लौन ॥ १८३ ॥ मन राखौं हौं बरजि कै जिय राखौं समझाय । नयना बरजे ना रहैं मिलैं अगाऊ जाय ॥ १८४ ॥ जब बरजत तब ना रहे राये प्रेम रसलैन । अपबसतैं परबस भये ये बिसवासी नैन ॥ १८५ ॥ पलन लगतहै एक पल छिन न घटत घट सांस । साहस मन जब तें चुसी नयन सैन की फांस ॥ १८६ ॥ समझाये समझत नहीं पलक देत नाहिं चैन । नीर भरे प्यासे रहैं निपट अनोखे नैन ॥ १८७ ॥ पिय सूरत चित लाय कै अब रोवैं यह नैन । बैरी आग लगाय कै दौरे पानी लैन ॥ १८८ ॥ प्यारे नयननि की कथन कैसे कहौं कविन्त । खिनक साह खिन चोरटा खिन बैरी खिन बिन्त ॥ १८९ ॥ अनियारे तीखे कुटिल अंकुश से दृग बारा । लागत सीधे आयके पाछे खैंचैं प्यारा ॥ १९० ॥ प्रीतम नयनन में गिरी जिन नयनन की सैन । फिर काढ़न को चाहिये बेई तीखे नयन ॥ १९१ ॥ लटपट पग धरती धरे अटपट बोलत बैन । कछु पियसों खटपट भई खुटपट टपकत नैन ॥ १९२ ॥ पातझरंते इमि कहैं सुन

तरवर बनराय। अबके बिछुरे कब मिलैं दूर परेंगे जाय ॥ १९३ ॥ आलस ऐसी प्रीति कर ज्यों बारिज हित बार। वह सूरवे वह ना रहे मिटे सूल दल डार ॥ १९४ ॥ प्रीति जो सीरवोई रव सों जहां जो रस की खान। जहां गांठ तहं रस नहीं यही प्रीति की बान ॥ १९५ ॥ बल्लरियां कुल वंतियां नेहा नाचू कंत। जित्थे कंठ बिलग्गियां। तित्थेही सूरवंत ॥ १९६ ॥ प्रीति जो ऐसी कीजिये ज्यों निशि चंदा हेत। शशि बिन निशहै सांवरी निशा बिन चंदा सेत ॥ १९७ ॥ विपत बराबर सुरव नहीं जो थोरे दिन होय। इष्ट मित्र बंधू जिते जा न परैं सब कोय ॥ १९८ ॥ नेह निबाहन है कठिन फिरयो जगत सब जोय। बिमल प्रीति नहिं देखिये स्वारथ लग सब कोय ॥ १९९ ॥ प्रीति प्रीति सब कोउ कहै कठिन तासुकी रीति। आदि अंत निबहै नही बालू कीसी भीति ॥ २०० ॥ सहस बार डुबकी। लई मुक्ता कर हिन लाग। सागर को कह दोष है बुरे हमारे भाग ॥ २०१ ॥ बाला निकसी तीरजब नीर चुवन बर बीर। मानो अ सुवन रोवती तन बिछुरन की पीर ॥ २०२ ॥ अलका- वलि में देखिये गोरे मुरवकी लोय। जो सूरवन में चांदनी मि- ल मिल झिल मिल होय ॥ २०३ ॥ मुक्ता तियके कानमें कांपुन सदा कंपाय। तिरछी चितवन तैं डरै मत फिर बेध्यो जाय २०४ ॥ रोमावलि हियरे सरवी नाहिन थेरी नाहिं। श्याम ध्यान हिरद- य बसे ताकी है परछांहिं ॥ २०५ ॥ चुम्बन समय जु नासिका बे सरसुनिय चुलाय। अधर चुरावन पीयपै मानो हाहा रवाय ॥ २०६ ॥ तिल चारा मानिय सलिल अलक फन्द बलचार। मन पक्षी गहि गहि किते डारै अवरा पिटार ॥ २०७ ॥ गुंजा ऐसे हो रहे मुक्ता बेसर बाल। नयन ओरके श्याम सब अधर ओरके लाल ॥ २०८ ॥ जबतैं मोंऊपर पड़ी श्याम सलोनी ज्योति। लौ- नी लागै भीति ज्यों देह दूबरी होति ॥ २०९ ॥ गोरे मुरवपर श्या- म तिल सेंचलियो जिय मोर। नेही कैसे बचरहै पड़े चांद नी चोर ॥ २१० ॥ फैंटा चले छिड़ाय कै निबल जान पिय मोहिं। मन की लगन छिड़ाय हो तो बल बदिहौं तोहिं ॥ २११ ॥ गौन समय।

फैंटा गह्यो सुन्दरि हित जिय जान । छूटतही दोऊ जुटे उत फैंटा इत प्रान ॥ २१२ ॥ गौन समय फैंटा गह्यो छांड़ जु कह्यो सुजान । पिऊ पियारे कहो तुम फैंटा तजूं कि प्रान ॥ २१३ ॥ आज सखी हम इमि सुन्यो पहु फाटत पिय गौन । पहु अरु हियरे दोयहैं पहिले फाटै कौन ॥ २१४ ॥ बाला प्रथम बियोगिनी घरही घर पूछंत । बलम पयाने से सखी बलयाहू बाढ़ंत ॥ २१५ ॥ बिरह घटा कौंधा सुरत झरा झरा कौंधत आहि । नैन नीर बर्षा लगी गरजन आहि कराहि ॥ २१६ ॥ सूनो भवन बिदेश पिय उससि सांस तिय लेत । मूरति आवै ध्यान में उठ उठ आदर देत ॥ २१७ ॥ आज द्वैज बिदेश पिय शशि निकस्यो इहिं ओर । मम नयना अरु पीयके आय भये इकठौर ॥ २१८ ॥ उन बिन सब ऋतु फिर गई देरव दिनन के फेर । जेठ भिजोई आंसुवन सावन । जारी घेर ॥ २१९ ॥ प्रीतम तुम्हरे दर्श कौं रह्यो अधर जिय आय । अब कह आज्ञा होतिहै रहै कि फिर घट जाय ॥ २२० ॥ सोमन मनसा इस हुती जन्म न छांड़ो पाय । बिछुरन अंक जु बिधि लिखे तासों कहा बसाय ॥ २२१ ॥ सुख ग्रीयम पावस नयन जिय महिया जड़ काल । पिय बिन तनतें तीन ऋतु कबहु न मिटत जमाल ॥ २२२ ॥ जब लग हिय में धर सकी तब लग धरो जु धीर । मीरन अब कैसी बनी जु अधिक पिरानी पीर ॥ २२३ ॥ मन बहलावत दिन गयो महा कठिन है रैन । कहा करौं कैसे मरों बिन देरवे नहिं चैन ॥ २२४ ॥ रिवन बैठै रिवन उठ चलै रिवन २ ठाढ़ी होय । घायल सी घूमति फिरै मरम न जानै कोय ॥ २२५ ॥ साहस तन मन ज्ञान गुण सबै गये पिय संग । चितवन दामिन सी गिरी मरम कियो जिन अंग ॥ २२६ ॥ बिरही लोगन में रहत तिय बिन नीर गंभीर । मीन रहत सब नीरमें इन मीनन में नीर ॥ २२७ ॥ तेरे बिरह समुद्र में हौं जहाज भइ कंत । तन मन जोबन डूबियो प्रेम ध्वजा फहरंत ॥ २२८ ॥ रोम २ बूंदैं चुवैं लोग प्रस्वेद कहंत । सजनी सजन बियोग तें सब तन रुदन करंत ॥ २२९ ॥ पिय बिछुरत बिछुरे सबै तन मनके सुरव चैन । घर बाहर न सुहात कछु तलफ कटैं दिन रैन ॥ २३० ॥ सम्मन इक दिन बैहुते बिचन सुहाते हार । बायु जु कोऊ फिर गई अब बिच परे पहार ॥ २३१ ॥ काल कूट तें

कठिन है जो ब्यापै उह लाल। यम नेरे आवे नहीं बिरह काल को। काल ॥ २३२ ॥ तन दुरव मन दुरव मैन दुरव हिये भई दुरव खान। मानो कबहूं नाहती या सुरव सों पहिचान ॥ २३३ ॥ रूप सयानप चातुरी सबै गई पिय साथ। देरवौ सरवी जु रह गई एक बौरई हाथ ॥ २३४ ॥ हौं सजनी जानत नहीं पिय बिछुरन की सार। जिय। बिछुरन तें कठिन है पिय बिछुरन की बार ॥ २३५ ॥ हौं सजनी। जानत नहीं बिछुरी भूले भाय। अब की बेर जु फिर मिलौं जन्म न छाड़ों पाय ॥ २३६ ॥ अह मद गति अवतार की कहत सबै संसार। बिछुरे मानुष फिरि मिलैं यही जान अवतार ॥ २३७ ॥ बिरह तपन अतिही कठिन जानत हैं सब कोय। देरव सती या आग कों जरि कै शीतल होय ॥ २३८ ॥ बिरह दही पन घट गई तपति न तऊ सिराय। भरे भरे शिर गागरी रीती ह्वै २ जाय ॥ २३९ ॥ मीरन बिछुरतही पिया उलट गयो संसार। चंदन चंदा चांदनी भये जरावन हार ॥ २४० ॥ तुमबिन रतो को करै कृपा जु मेरे नाथ। मोहिं अकेली जानि के दुरव राख्यो है साथ ॥ २४१ ॥ मीरन प्यारे असकाह्यो सपने देरवौ मोहिं। तुमबिन नींद न आवही कैसे देरवों तोहिं ॥ २४२ ॥ प्यारे मेरे नींद की बात तिहारे हाथ। आवति है तुम साथही गई तिहारे साथ ॥ २४३ ॥ एकौ दुरव निवरे व नहीं दूजो पहुंच्यो आय। हियो कहौं कै पुल कहौं दुरव की किधौ सराय ॥ २४४ ॥ कहा करौं परगट नहीं लागत तोसों घात। प्यारे सपने सांझ में मेरी तेरी बात ॥ २४५ ॥ प्रीतम प्यारे के बिरह। नागिन सी यह रैन। लम्बी कारी बियभरी देरव भज्यो है चैन ॥ २४६ ॥ घरी पहर सी पहर दिन दिन मा पहर समान। छिन २ दूबरि बिन मिले मोहिं तिहारी आन ॥ २४७ ॥ लाल पिया के बिछुरते बिछुर गये सब चैन। भूरव प्यास नींदौ गई ऊई बायु भये नैन ॥ २४८ ॥ जब लग चल मारग पिया आवन की अवसेर। तब लग हियमें हे सरवी हौं सनि के भये ढेर ॥ २४९ ॥ प्रीतम तुम गुण बेलरी पसरी मो उर माहिं। नेह नीर सों नित बढ़ै। क्योंहूं सूरवत नाहिं ॥ २५० ॥ प्रीतम को संदेशरा कहत हियो

रुंधियाय । सूधे बात न आवही योंहीं कहियो जाय ॥ २५१ ॥ प्रीतम कों पतियां लिखी लिखत लिखी भरताव । वामें और कछू नहीं कै हाहा कै आव ॥ २५२ ॥ कर कांपत पतिया लिखत जल भरि आवत नैन । कोरो कागद हाथ दै मुखही कहिये बैन ॥ २५३ ॥ कागद भीजत नयन जल कर कांपत मसि लेत । पापी बिरहा मन बसत बिथा लिखन नहिं देत ॥ २५४ ॥ तुम बिछुरत छिन में मरौं कहा जियों खिन तोहिं । तुव मूरत मोमन बसै वहै जि आवत मोहिं ॥ २५५ ॥ लिखन पढ़न कीहै नहीं कही सुनी नहिं जात । अपने जियतें जानियो मेरे जिय की बात ॥ २५६ ॥ इहि गुण पतिया ना लिखों धरे रहों मन मौन । तुम प्रीतम जियमें बसौ पाती बांचै कौन ॥ २५७ ॥ पतिया ताहि पठाइये जो साजन परदेश । निशदिन हिरदे में बसै ताको कहा संदेश ॥ २५८ ॥ बायस राहु भुजंग हर लिखत तिया ततकाल । लिखि लिखि पोंछति फिर लिखति कारण कौन जमाल ॥ २५९ ॥ प्रीतम तुम मति जानियो भयो दूर को बास । देह खेह कितहूं रहै प्राण तिहारे पास ॥ २६० ॥ मन माला तुव नाम की जपत रहौं दिन रैन । नयन पियासे दरश के नेक न पावैं चैन ॥ २६१ ॥ बासर भूषण नींद दिश चित चिंता पिय तोरि । लोयन गंग तरंग गति उठति हिलोरि हिलोरि ॥ २६२ ॥ पाती लिखन संदेश तहं जहां न पहुंचै आप । प्रीति लुकंजन आंजिकै करिये मीत । मिलाप ॥ २६३ ॥ मन चाहतहै मिलन को मुख देखन को नैन । श्रवण जु चाहतहै सुनन पियप्यारे के बैन ॥ २६४ ॥ कर कमलन पाती लिखों प्यारी चतुर सुजान । इक इक अक्षर पै सखी वारौं तन मन प्रान ॥ २६५ ॥ मेरो मन तोपै रह्यो तेरो मन मों माहिं । दोऊ ब्याकुल बिन मिले चैन शरीर हि नाहिं २६६ ॥ तेरो मेरो एक मन दिखियत दोय शरीर । बाण जु मारै काम इक होत दुहुन को पीर ॥ २६७ ॥ मसि लेखन कागद नहीं समाचार है मौन । अब हम तुम एकै भये लिखे कौन को कौन ॥ २६८ ॥ नाद शब्द में वश कियो मांस बेंच धन लेहु । मृगछाला

स्वरूप बल द्रव्य को प्रीति करै सब कोय। तुलसी प्रीति सराहिये जु इन ते बाहर होय ॥ ३०६ ॥ मीन काट जल धोइये खाये अधिक पियास। तुलसी प्रीति सराहिये मुये जीत की आस ॥ ३०७ ॥ कहा कहौं छबि आज की भले बने हौ नाथ। तुलसी मस्तक तब नवै धनुष बाण लो हाथ ॥ ३०८ ॥ मुरली मुकुट दुराय कै नाथ भये रघु नाथ। तुलसी रुचि लखि दास की धनुष बाण लियो हाथ ॥ ३०९ ॥ पशू गढ़ंते नर भयो भूले सींग अरु पूंछ। तुलसी हरि की भक्ति बिन धरे दाढ़ी अरु मूंछ ॥ ३१० ॥ प्रभुता को सब कोउ चहै प्रभु को चहै न कोय। जो तुलसी प्रभु को चहै आपुहि प्रभुता होय ॥ ३११ ॥ तुलसी घर के घेर में घरी घरी तन छीन। कबहूं नाबन बन फिरै कर करवा कोपीन ॥ ३१२ ॥ घर के घूमर घेर में राम चरण लौ लीन। तुलसी ऐसे संत को कह करवा कापान ॥ ३१३ ॥ काम क्रोध मद लोभ की जब लग मन में खान। तब लग पण्डित मूरखौ तुलसी एक समान ॥ ३१४ ॥ तुलसी या जग आय के कौन भयो समरत्थ। एक कंचन अरु कुचन को किन न पसारे हत्थ ॥ ३१५ ॥ मन रावत वैराग में घर में रावत रांड़। तुलसी किरवा नींब को चाख्यो चाहत खांड़ ॥ ३१६ ॥ जब लग अंकुश शीश पर तब लगि निर्मल देह। तुलसी अंकुश बाहिरे शिर पर डारत खेह ॥ ३१७ ॥ तुलसी काया खेत है मनसा भयो किसान। पाप पुण्य दोउ बीज हैं बवै सु लुनै निदान ॥ ३१८ ॥ एक घड़ी आधी घड़ी आधीहू में आध। तुलसी संगति साधु की हरै कोटि अपराध ॥ ३१९ ॥ स्वामी ते सेवक बड़ो जो निज धर्म समान। राम बांधि उतरे जलधि कूदि गये हनुमान ॥ ३२० ॥ स्वामी को सेवक घने सेवक को प्रभु एक। तुलसी दोसें सो बड़ो। जाके मन में टेक ॥ ३२१ ॥ तुलसी मनको सुकुर है लखवै सुलक्षण कोय। जैसो जाको भावहै तैसो देखवै सोय ॥ ३२२ ॥ होत भले के अन भलो होत खानि के खूस। होत कुपूत सपूत के ज्यों पावक महँ धूम ॥ ३२३ ॥ नीच निचाई ना तजै साधु नहूं के संग। तुलसी चंदन बिटप बश बिन विष भौन भुवंग ॥ ३२४ ॥

आसन दृढ़ आहार दृढ़ सुमति ज्ञान दृढ़ होय। तुलसी बिना उपासना बिन दूलह की जोय ॥ ३२५ ॥ तन सुरवाय पिंजर करै धरै रैन दिन ध्यान। तुलसी मिटै न वासना बिना विचारे ज्ञान ३२६ आवत हीं हर्षै नहीं नयनन नहीं सनेह। तुलसी तहां न जाइये कंचन बर्षै मेह ॥ ३२७ ॥ हर्षि उठै आदर करै आवत जान अतीत। तुलसी तबहीं जानिये परमेश्वर सों प्रीत ॥ ३२८ ॥ तुलसी या संसारमें भांति भांति के लोग। मिलिये मिलिये प्रेमसों नदी नाव संयोग ॥ ३२९ ॥ तुलसी बिलंब न कीजिये मिलिये सबसों धाय। को जानै कहिं भेष में नारायण मिलि जाय ॥ ३३० ॥ तुलसी कहत पुकारि के सुनो सकल दै कान। हेम दान गज दान तें बड़ो दान सनमान ॥ ३३१ ॥ परसुख संपति देखि सुनि जरहिं तेजहीन बिन आग। तुलसी तिनके भागते चलै भलाई भाग ॥ ३३२ ॥ तुलसी कबहुं न त्यागिये अपने कुल की रीति। लाय कही सों कीजिये ब्याह बैर अरु प्रीति ॥ ३३३ ॥ ज्ञान गरीबी हरि भजन कोमल बचन अदोष। तुलसी कबहुं न छोड़िये क्षमा शील संतोष ॥ ३३४ ॥ तुलसी सुपुरुष सेइये जब तब आवै काम। लंक विभीषण को दई बड़े विचित्त में राम ॥ ३३५ ॥ तुलसी निज कीरतिवह परकी कीरति खोय। तिनके मुख मसि लागिहै मिटै न मरिहै धोय ॥ ३३६ ॥ बहुत गई आनंद सों रही नेक सी आय। तुलसी चिंता मत करो श्री रघुनाथ सहाय ॥ ३३७ ॥ तुलसी जगमें आयके कर लीजे दो काम। देबे को टुकड़ा भला लेबे को हरि नाम ॥ ३३८ ॥ तुलसी या संसारमें पंच रत्न हैं सार। साधु मिलन अरु हरि भजन दया दीन उपकार ३३९ ॥ बैर सनेह सयान को तुलसी जो नहिं जान। सो किमि प्रेम मग पग धरै पशु बिन पूंछ बिषान ॥ ३४० ॥ तुलसी तृषा जल। कूपको निर्धन निपट निकाज। कै रारवै कै संग चलै बांहय गहे की लाज ॥ ३४१ ॥ लिखि लिखि लिखि सब जग लिख्यो पढ़ि पढ़ि पढ़ि कह कीन। बढ़ि बढ़ि बढ़ि घटि घटि गये तुलसी राम न चीन ॥ ३४२ ॥

अथश्लेष

पीवकचौरी है सखी पूरी परती नाहिं । मन लडुआ करती फिरी विरह दही मन माहिं ॥ ३४३ ॥ कच्चौरी पिय ये सखी । पक्कौरी पिय नाहिं । बरा बरी कैसे करौं पूरी परै कि नाहिं ॥ ३४४ ॥ अमिली बरषै होरही पीपर पास न जाउं । जा मुनि भेद न पावहीं तासों मैं अठिलाउं ॥ ३४५ ॥ करना फूल्योये सखी सु पीबिन क्या करना । जो प्रीतम करना गहैं तो जीले । क्या करना ॥ ३४६ ॥ नारंगी हो पीवसों यह अनार पनमोहिं । जोमैं पीवे सेवती सदा सदा फल होहिं ॥ ३४७ ॥ तो ताकति निशदिन रहै तूती निपट अजान । लाल कहै सो कीजिये तज मैंना की बान ॥ ३४८ ॥ सूख छुआरा तन भया गिरी परै सब देह । किसमिस लिखूं संदेशरा नौज लगौ यह नेह ॥ ३४९ ॥ कर छूही वर टाइ नहिं तवा टाकनी नाहिं । चौके गरवो घारिया रेसन रसोई माहिं ॥ ३५० ॥ पालक लेनेहो गई पिय सोया पाया । मैंथी निपट अजान लालमैं चूक जगाया ॥ ३५१ ॥

सोरठा

कीकर पाकर तार जामन फलसी आमिला
सेव कदम कचनार पीपल रत्ती तूनतज ॥ ३५२ ॥

अथप्रश्नोत्तर

कहा न अबला करि सकै कहा न सिंधु समाय । कहा न पावक में जरै काल काहि नहिं खाय ॥ ३५३ ॥ सुत नहिं अबला करिसकै मन नहिं सिंधु समाय । धर्म न पावक में जरै नाम काल नहिं खाय ॥ ३५४ ॥ प्रीतम या कलि कालमें कह ऐसें को आहि । एक बस्तु जिहिं सौंपिये देदश गुण करि ताहि ॥ ३५५ ॥ सुनो अर्थ मन मोहनी है यह धरा सुभाइ । बोये एकै बीज के देदश गुण करताहि ॥ ३५६ ॥ ऐसो बहु मख कौन है खात जु नाहिं अघाय । खात खात भोजन घटै तब आपहि मरजाय ॥ ३५७ ॥ बहु भखज्वाला जानिये तृण लकड़ी

बहु खाय। जब भोजन घटि जात है तब सीरीह्वै जाय॥ ३५८॥ दृग मूँदे सब देखिये कौन सुकुर सोई। जो चरव खोलिनिहारिये कछू न आवे दीउ॥ ३५९॥ बहु स्वप्ने को सुकुर है सोवत सब दिखराय। जागे कछु सूझै नहीं जब दृग है खुल जाय॥ ३६०॥ रहत भाकसी में सदा चिंता कछु न जनाय। रुदन करै छूटै जबै वाको नाम बताय॥ ३६१॥ बालक वाको नाम है गर्भ भाक सी जान। जबनिकसै तब रोय है वाको यही बखान॥ ३६२॥ तिय बिगार नर शिर परै नर बिगार शिर तीय। येचारोंही पूंछिये कहो शोच के तीय॥ ३६३॥ भूमि बिगारत श्वाननी नाम श्वान को लेइ। हानि करै मंजार सो दोय मंजारीदेइ॥ ३६४॥ न्यारे न्यारे पुरुष हैं सकल होहिं इकठाम। तब सब कोऊ कहत हैं उनको नारी नाम॥ ३६५॥ मनके तोलौं पुरुष हैं न्यारे न्यारे आहिं। धागे माहिं परोइये माला कहिये ताहि॥ ३६६॥ न्यारी न्यारी नारिहैं मिलैं सो पुरुष न माहिं। तब सब कोउ नर भाखिये नारी काहियत नाहिं॥३६७॥ अश्व अश्वनि इक संग हैं जबहिं कहत दल होय। कहत सबै घोड़ा जुरे घोड़ी कहत न कोय॥ ३६८॥

अथ कुराडलिया

बैरी बंधु आ बानिया ज्वारी चोर लबार। व्यभिचारी रोगी कृतघ्नी नगर नारि कोयार। नगर नारि को यार भूलि परतीति न कीजै सौ सौ सौहैं खाय चित्त एकौ नहिं दीजै। कह गिरधर कवि राय घरै आवै अन गौरी हितकी कहै बनाय जानिये पूरो बैरी॥ ३६९॥ बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताय। काम बिगारै आपनो जगमें होत हंसाय। जगमें होत हंसाय चित्तमें चैन न पावै। खान पान सनमान राग रंग मनहिं न आवै कह० दुःख कछु टरत न टारे। खटकत है जिय माहिं कियो जो बिना बिचारे॥ ३७०॥ बीती ताहि बिसारिदे आगो की सुधि लेउ। जो बनि आवै सहज में ताही में चित देय। ताही में चित देय बात ज्योंही बनि आवै दुर्जन हँसै न कोय चित्तमें खेद न पावै

कह० यही कर मन परतीती। आगे को सुख होय समझ बीती सो बीती ॥ ३७१ ॥ साईं ये न बिरुद्धिये गुरु पारीछत कवि-यार। बेटा बनिता पौरिया यज्ञ करावनहार। यज्ञ करावन हार राज मंत्री जो होई। बिप्र परोसी बैद आपको तपै रसोई। कह० यहै कैसी समझाई इन तेरह तें तरह दिये बनि आवै साईं ॥ ३७२ ॥ साईं अपने चित्त की भूलि न कहिये। कोय। तब लग मन में राखिये जब लग कारज होय। जब लग कारज होय भूल कबहूं नहिं कहिये। दुर्जन ताती होय आप सीरे ह्वै रहिये। कह० बात चतुरन के ताईं करतूती। कहि देत आप कहिये नहिं साईं ॥ ३७३ ॥ चिंताज्वाल शरीर बन दावा लगि लगि जाय। प्रगट धुवां नहिं देखिये उर अंतर धुंधुवाय। उर अंतर धुंधुवाय जरै ज्यों कांच की भट्ठी। जरगयो लोहू मांस रहगई हाड़ की ठट्ठी। कह० सुनो हो मेरे मिंता वे नर कैसे जियैं जाहि तन व्यापति चिंता ॥ ३७४ ॥ राजा के दरवार में जैये समयो पाय। साईं तहां न बैठिये जहं कोउ देय उठाय। जहं कोउ देय उठाय बोल अन बोले रहिये। हँसिये ना बहराय बात पूंछे ते कहिये। कह० समयसों कीजै काजा। अति आतुर नहिं होय बहुरि अनरवै हैं राजा ॥ ३७५ ॥ कृत घन कबहुं न मानहीं कोटि न करौ जो कोय। सर्वस आगे राखिये तऊ न अपनो होय। तऊ न अपनो होय भले की भली न मानै। काम काढ़ि चुपरहै फेर तिहि नाहिं पिछानै। कह० रहत नितही निर्भय मन। मित्र शत्रु सब एक दाम के लालच कृत घन ॥ ३७६ ॥ जाकी धन धरती लई ताहि न लीजै संग। जो संग राखै ही बनै तौ करि राखै अपंग। तौ करि राखै अपंग फेरि फरकै सो न कीजै। कपट रूप बतराय ताहि को मन हर लीजै। कह० खटकै जैहै नहिं ताकी। कोटि दिलासा देउ लई धन धरती जाकी ॥ ३७७ ॥ साईं अपने भ्रातको कबहुं न दीजै त्रास। पलक दूर नहिं कीजिये सदा राखिये पास। सदा राखिये पास त्रास कबहूं नहिं दीजै त्रास

दियो लंकेश तासु की गति सुनि लीजै। कह० रामसों मिलि
यो आई। पाय विभीषण राज लंकपति बाज्यो साईं ॥ ३७८ ॥
साईं बेटा बापके बिगरे भयो अकाज। हरणाकुश अरु कंश।
को गयो दुहुन को राज। गयो दुहुन को राज बाप बेटा के बिग
रे। दुसमन दावा दार भये महि मराडल सिगरे। कह० उन्हें का
हू न बताई। पिता पुत्रकी रार लाभ एकौ नहिं साईं ॥ ३७९ ॥
साईं नदी समुद्र को मिली बड़पनो जान। जाति नाश भयो मि
लतही मान महत की हानि। मान महत की हानि कहौ अब
कैसी कीजै। जलखारी हुइ गयो ताहि कहु कैसे पीजै। कह० कच्छमच्छन
सकुचाई बड़ी फजीहत चार भयो नदियन को साईं ३८० साईं सन अरु
दुष्ट जन इनको यही सुभाव। खाल खिंचावैं आपनी परबंधन के दाव।
पर बंधन के दाव खाल अपनी खिंचवावैं। गुंड काटि के कुटि
य तऊ पर बाज न आवैं। कह० जरे अपनी कुटिलाई। जलमें गि
रि सड़गये तऊ छोड़ी न खुटाई ॥ ३८१ ॥ साईं समौ न चूकि
ये यथा शक्ति अनुमान। को जानै को आयहै तेरी पौरि प्रमा
न। तेरी पौरि प्रमान समय असमौ तकि आवै। ताको तू म
न खोल अंक भरि कंठ लगावै। कह० सबै यामें सधि आ
ई। शीतल जल फल फूल समय जिन चूको साईं ॥ ३८२ ॥
साईं हरि रोमी करी बलिके द्वारे जाय। पहिले हाथ पसारिकै
बहुरि पसारे पांय। बहुरि पसारे पांय मतो राजाने बतायो।
भूमि सबै हरि लई बांधि पाताल पठायो। कह० राव राजन के
ताईं। छल बल करि पर भूमि लेत को तृप्त्यो साईं ३८३।
साईं पुर पाला पर्यो आसमान ते आय। पंगुहि अंधे
छोड़ के पुरजन चले पराय। पुरजन चले पराय अंध इक
मतो बिचार्यव। पंगु कंधपै लियो दृष्ट बाकी पग धार्यव।
कह० मतेह्वै चलिये साईं। बिना मतेको राज गयो रावण
को साईं ॥ ३८४ ॥ सोना लेने पी गये सूनो करि गये देश।
सोना मिले न पी फिरे रूपा होगये केश। रूपा हो गये के
श रूप सब रोय गँवायो। घर बैठी पछताय कंत अजहूं नहिं

सूरवे एक सेहूजतहैं रसराय। हूजतहैं रसराय बिलग जिन याकोमानो। मधुर मिष्ट हम अधिक कछू जिन जिय में जानो। कह० कहत साहिब सों रहुआ। तुम नीची कुल बेलि वृक्ष हम ऊंचे महुआ॥ ३९९॥ गुल तुर्रा सों जाय के बाद करै जु करील। हम तुम सूरवे एकसे पूँछि देखिये भील। पूँछि देखिये भील भेद जो जानै मेरो। तूहू पूँछि बुलाय भेद जो जानै तेरो। कह० न तरहौं करिहौं हुर्रा। अब जिन भूलि गुमान करै फिर हो गुल तुरी॥ ४००॥ बगुला झपटत। बाजपै बाज रहै शिर नाय। कुलहा दीन्हे पग बंधे खोंटे दे फहराय। खोंटे दे फहराय कहै जो जो मन आवै। कुलहा लै पग छोरि धनी बिन कौन छुड़ावै। कह० अरे तू सुनखगबगुला। समयो पलट्यो जान बाजपै झपटै बगुला॥४०१॥ कौआ कहत मराल सों कौन जाति को गोत। तोसों बद रूपी महा कोऊ न जग में होत। कोउ न जग में होत कुटिल मैले मलखाने। उसर बैठ मर्य्याद भ्रष्ट आचार न जाने। कह० कहांते आयो हौआ। धन्य हमारो देश जहां सज्जन जन कौआ॥ ४०२॥ साईं घोड़न के अछत गदहन आयो राज कौआ लीजै हाथ में दूर कीजिये बाज। दूर कीजियो बाज राज ऐसोही आयो। सिंह कैद में कियो स्यार गजराज चढ़ायो। कह० जहां यह बूझ बड़ाई। तहां न कीजै सांझ सवारेहिं चलिये साईं॥ ४०३॥ भौंराये दिन कठिन हैं दुख सुख सहौ शरीर। जब लगि फूलै केतकी तब लगि बिरम करील। तब लगि बिरम करील हर्ष मनमें नहिं कीजै। जैसी बहै बयार पीठ तब तैसी दीजै। कह० होय जिन जिनमें बौरा। सहै दुःख अरु सुःख एक सज्जन अरु भौंरा॥४०४॥ हिरणा बिरझेव सिंह सों औझर खुरी चलाय। झार झंड झीमौ पर्‍यो सिंहा गयो बराय। सिंहा गयो बराय समौ सामर्थ बिचार्‍यो। कुलहिं कालिमा लाय हंस्यो हँसि कै कहि हार्‍यो। कह० मोहिं याही बन फिरना। आज गैर कर जाउं काल मैं हौं कै हिरना॥४०५॥ पानी बाढ्यो नाव में

घरमें बाढ्यो दाम । दोऊ हाथ उलीचिये यही सयानो काम। यही सयानो काम नाम ईश्वर को लीजै । परस्वारथ के काज शीश आगे धरिदीजै ॥ कह० बड़ेन की यही है बानी । बलिये चाल सुचाल राखिये अपनो पानी ॥ ४०६ ॥ मैना । जानौं जीवकी तोता को दिनरैन । बक बकरी केता कहूं मोर कहांते चैन । मोर कहांते चैन दुनिये में तीतर जानो । गलि गलि आई बाज मौन ताहीतें मानो । कह० सुने कुरंगकेबयना । पियगलडारीबांह हंस मुख देखो नयना ॥ ४०७ ॥ हुक्का बांध्यो फेट में गहि लीनीनै हाथ । चले राह में जातहैं बांधि तमाकू साथ । बांधितमाकू साथ गैल को धंधा भूल्यो। गइ सब चिंता दूरि आगि देखत मन फूल्यो । कह० जुयम को । आयो रुक्का । जीवलैगयो काल हाथमें रहिगयोहुक्का ४०८ ॥

अथ बरवा

हरि पद रुचिर तरनियां चढ़ मनमोर । तरभव सागर अबहीं दिन रहे थोर ॥ १ ॥ मोहन के मुख सोहन मोहन जोग। रूप असन अंखियन को भस्मक रोग ॥ २ ॥ ऊंचजाति बालरियां बरणि न जाय । दौर दौर पालागी शीश छुआय ॥ ३ ॥ बड़ि २ आंख बरणियां हियहरि लेय । पतरी के असडोभक रेजवा देय ॥ ४ ॥ घाट बाट लै बानिन हाट बईठ । कहत। काहु नहिं जीजी बतियन सीठ ॥ ५ ॥ नीकजात कुरमी की रुरुपी हाथ । आपन खेत निरावै पियके साथ ॥ ६ ॥ अहिरनि मनकी गहरी उतरन देय । नयना करै मथनियां मनमथ लेय ॥ ७ ॥ हलुआ असहल वनियांगरवा लाल लाल२ह्वै जुबना नयन रसाल ॥ ८ ॥ टेढ़ मांग नाइन की नहरन हाथ। फिरि पाछे जोहैरै महतो साथ ॥ ९ ॥ चीकनगाततेलिनियां बरणि न जाय । चितवन रूप अनूप दृष्ट लपटाय ॥ १० ॥ मैली एक धोबिनियां झुजर गांव । भूली कंत बिन लैलै कल पति नांव ॥ ११ ॥ झमक चली कसइनियां दैदै सैन । धरै। करैजवा छुरियां कर२ पैन ॥ १२ ॥ नीकजाति तुरकिनकी

बहुते लाज । जानै पियकी सेवा और न काज ॥१३॥ सुंदरि तरुणी तंबोलिनि तरबन कान। हेरै हँसै हरै मन फिरै पान १४। भर भूजिन कन भूजहि बैठि दुकान। फुदका करति बिहंसि। कै बिरही प्रान ॥१५॥ कलवारी मद माती काम कलोल। भरि भरि देत पियलवा महा ठठोल ॥१६॥परद वार तन नाजुक कैथि न नारि। शंक धरै घूंघुट दृगचली निहारि ॥१७॥ अचरज करति लुहरिया पियके पास। जाहि छुवत बिन जियके लेय उसास ॥१८॥ खेलफाग धन बहुरी धूरि उड़ान। गावो बालम बरवै ऋतु नियरान ॥१९॥ निशदिन बसै हिरदवा मिलन न होय। जिमि पानी के चंदहिं छुवै न कोय ॥२०॥ पात २ कर ढूंढ़यो सब बन बीन। घटहि हुते सो बालमपरे न चीन ॥२१॥हाथ उपरिया रहगई गिरगइ आरि। घरकी पौरि बिसर गई गोहन लागि ॥२२॥ बालम सुरत बिसर गइ कहत संदेशा। ए कोपथिक न बहुरे कस वह देशा ॥२३॥ बालम होमों बालमतुम कस कीन। लोग कुटुम्ब इमि छांड़सि तुम मन दीन॥ २४॥ बालम तुम तन चितवत गागरि फूटि। अचरा गो फहराय धरमगो छूटि। २५॥ सूरति पै शिर ऊपर कितहु न छांह। ठाढ़ी पथहि निहारों कत मेरी नाह॥ २६॥ बालम की सुधि आवत यह गति मोर। निकस२ जिय पैठत ज्यों चकडोर ॥ २७॥ बिरहिनि ढूढ़ति बनगई बाघ भिटान। बघवा सूं घन रवाइल बिरहिनि जान ॥२८॥ नितउठ जाउं पन घटवा। आवहुं रोय। बालम की उनहरवां दिखवहुं न कोय ॥२९॥ बोली आनि कोयलिया मधुरी बान। महुआरोवै ठाढ़ आम बौरान ॥३०॥ प्रेम प्रीति को बिरवा चलहु लगाय। सींचन की सुधि लीजो बिसरि न जाय ॥३१॥ असमन होत बलम अब। कतहुं न जाय। शरिवये रातहुं दिवस हिरदवा लाय ॥३२॥। पात पात कर लूटिस बिपिन समाज। राजनीत यह कसि कसि कस ऋतुराज ॥ ३३॥ चलत न शोच करसि सखि सगुरा सभाग। है ससुरार तुम्हारिहु घनबन बाग ॥३४॥कारे

बरण कोयलिया कुहकत आन। अम्बा चढ़ि डरपावति पिय बिन जान ॥३५॥ भले भेट बालम सन भट किहु आय। धाय२ बन खाय वेष महिं जाय। बालम चलत न भेटे छतियां लाय। सोई कसक करेजवा कसकति आय॥३६॥ बदरन धरी धनुहियां करत अचेत। बुंदियन के करि बाण करेजवा देत॥३७॥ नयना भीतर भितवा रहत जु ठाढ़। निकस न कबहुं न भेटिस असमन गाढ़॥३८॥ हरद बरण मोरी देही पियहि वियोग। कौन व्यथा म्वहिं बूझहु बाउर लोग॥३९॥

अथ अरल

भज सूआ हरि नाम कि बैठा ताकमें। दिना चारि का रंग मिलैगा खाकमें। साहिब बेग संभार कालसों रारहै। यम के हाथ गुलेल फटक्का पारहै॥१॥ यह दुनियां बाजीद पलक का पेखना। यामें बहुत बिकार कहो क्या देखना। सब जीवन का जीव जगत आधार है। परहां बाजीदा जो न भजै भगवंत छठीमें छारहै॥२॥ दो२ दीपक बार महल में सोवते। नारी से करि नेह जगत महँ जीवते। सोंधा तेल लगाय पान मुख खांइगे। बिना भजन भगवान के मिथ्या जांइगे॥३॥ राम नाम की लूट फबैहै जीवको। निशि बासर करि ध्यान सुमिर तू पीवको। यहै बात परसिद्ध कहत सब शांवरे। परहां बाजीदा अधम अजामिल तरे नारायण नांवरे॥४॥ गाफिल हुये जीव कहौ क्यों बनतहै। या मानुष के सांस जु कोऊ गिनतहै। जाग लय हरि नाम कहां लौं सोयहै। परहां बाजीदा चाकी के मुख पर्यो सु मैदा होयहै॥५॥ आज सुनै कै काल कहत हौं तुज्झको। भावै बैरी जान जीव तू मुज्झको। देखत अपनी दृष्टि खता क्यों खातहै। परहां बाजीदा लोहे कैसो ताव जन्म यह जातहै॥६॥ केते अर्जुन भीम जरा जसवंत से। केते गिने अशंक बली हनुमंत से। जिनकी सुन सुन हांक महा गिरि फाटते। परहां बाजीदा तिन धर खायो काल जु इंद्रहिं डाटते॥७॥ हौं जानौं कछु मीठ अंत कह तीत

है। देख्यों हृदय बिचारि देह यह अनीति है। पान फूल रस भोग अं
त कह रोग है। परहां वाजीदा प्रीतम प्रभु के नाम बिना सब
शोग है ॥ ८ ॥ देख तमाशा अजब जो लगी पठाननू। होया।
खड़ा निहंग पकड़ सूजाननू। लगा लुटावन आप आपना स-
र्बजर। परहां वाजीदा कौन साहिब नू अक्खे यों नहिं यों कर॥
९॥ नबियादा शिरताज खंभदर गाहदा। सब नादा मख बूल
रसूल खुदाहदा। उम्मत दे युत जीवन उसदी जानभर। परहां
वाजीदा कौन साहिब नू अक्खे यों नहिं यों कर ॥ १० ॥ बि-
नाबास का फूल न ताहि सराहिये। बहुत मित्र की नारि सों।
प्रीति न चाहिये। शठ साहिब की सेव कबहुं नहिं कीजिये।
परहां वाजीदा विद्या बिद अरु जिंद अकाज न दीजिये॥११॥
एक राम कहत कलमा न डूबा कोइरे। अर्द्ध नाम पाषा-
णभरा निर लोइरे। कर्म कि कैतिक बात बिलगह्वै जांइगे।
परहां वाजीदा हाथी के असवार कुत्ते क्यों खांइगे॥१२॥
कुंजर मन में मत्त मरै तौ मारिहै। कामिनि कनक कलेश
टरै तौ टारिये। हरि भक्तन सों नेह पलै तौ पालिये। परहां वा-
जीदा राम भजन में देह गलै तौ गालिये ॥ १३ ॥ जेती बोली
बाणी सो तौ वह रही। हृदय कपट की बात तौ मुख सों का क-
ही। बोले बोली बोल बुलाई पीव की। परहां वाजीदा ऊपर
की सब झूँठ फलैगी जीव की॥ १४ ॥ घड़ी २ घड़ियाल पु-
कारै कहीहै। बहुत गई है अवधि अल्पही रहीहै। सोवे क-
हा अचेत जाग जग पीवरे। परहां वाजीदा चली है आज कि
काल्ह बटाऊ जीवरे ॥ १५ ॥ जोजिय में कछु ज्ञान पकरहू
मन्न कौ। लिपटहि हरि को हेत सुजावत जंन्न को। प्रीति स-
हित दिन रैन राम मुख बोलई। परहां वाजीदा रोटी ली-
ये हाथ नाथ संग डोलई ॥ १६ ॥ पानौ लगै न ताहि तहां।
लौं गोयरे। रीते हाथ न जाय जगत सब जोयरे। यह माया
वाजीद चलै क्या साथरे। बहते पानी बीर पर वाली हाथरे॥
१७ ॥ पाहन कोरा रहै बरस ते मेह में। घाल धरी धाजीद

दुष्टता देहमें। उसै औचका आय भूंठ रहि रोइये। परहांवा जीदा सर्पहिं दूध पिलाय वृथाही खोइये ॥१८॥ बदन विलोकित नयन भई हौ बावरी। धारे दराड विभूति पगान है पावरी। कर योगान कोभेष सकलजग डोलिहौं। परहां। वाजीदा ऐसो मरे नेम पीउ पिउ बोलिहौं ॥१९॥ एकै। नाम अनना कहूं के लीजिये। जन्म २ के पाप चुनौती दीजिये। लेकर चिनगी आग धरै तू अब्बरे। परहां वाजीदा कोठी भरी कपास जाय जल सब्बरे ॥२०॥

अथ छप्पय

तिलक भाल बनमाल अधिक राजत रसाल छबि। मोर मुकुट की लटक चटक बररात अटकत कवि। पीताम्बर फहराय मधुर मुसक्यानि कपोलन। रच्यो रुचिर मुरव पान तान गावत मृदु बोलन। रति कोटि काम अभिराम अति दुष्ट निकंदन गिरि धरन। आनन्द कंद ब्रज चंद प्रभु सुजय जय जय अघारण पूरण ॥१॥ मोर मुकुट नग जटित करण कुंडल हेम झलकैं। मृग मद तिलक ललाट कमल लोचन दल पलकैं। घूंघर वारी अलक कौस्तुभ कंठ बिराजै। पीत बसन बनमाल मधुर मुरली धुनि बाजै। कर नख कोटि आभा बरण सु चंद सूर्य देखत लजत। ब्रह्म देव दे भक्तजन सु श्याम रूप प्रीतम सजत ॥२॥ चतुरानन सम बुद्धि विदित जो होय कोटि धर। एक एक धर प्रति निशीश जो होय कोटि धर। शीश शीश प्रति बदन कोटि कर्तार बनावै। एक एक मुख माहिं रसन फिरि कोटि लगावै। रसन रसन प्रति शारदा कोटि बैठि बानी कहहिं। महिजन अनाथ के नाथ की महिमा तबहुं न कहि सकहिं ॥३॥ भूमि परत अवतरत करत बालक विनोद रस। पुनि योवन मद मत्त तत्व इंद्री अनंग बस। विषय हेतु जड़ फिरत बहुरि पहुंच्यो बुढ़ापन। गयो जन्म गुण गनत अंत कछु भयो न आपन। थिर रहत न कोउ नरपति न बल

रहन एक चहुं युग सुयश। सोइ अजर अमर नरहर निरख
जोइ पियत भगवंत रस ॥ ४ ॥ विमल वित्त करि मित्र शा-
त्रु छल बल वश किज्जिय। प्रभु सेवा वश करिय लोभ वं-
तहि धन रज्जिय। युवति प्रेम वश करिय साध आदर वश
आनिय। महाराज गुण कथन बंध सम रस मन मानिय।
गुरुन मत शीशरस सों रसिक विद्या बलबुधि मन हरिय।
सूरख विनोद सु कथा बल न सुभ सुभाव जग बसु करि-
य॥ ५ ॥ याचक लघुपद लहै कामतुर जो कलंक पद।
लोभी दुर्यश लहै अशन लालची लहै गद। सूरख अब गु-
ण लहै लहै पढ़ि पढ़ि गुण पंडित। सूर सुरत यश लहै रहै
रणमें महि मंडित। निर्वान सुपद योगी लहै जौन गहै म-
मता सुमति। सुख भगत जतन जन लहै करे जुनौ विधि भक्ति
अति ॥ ६ ॥ धिक मंगन बिन गुनहिं गुनहिं धिक सुनत न
रीझै। रीझक धिक बिन मौज मौज धिक देत जो खीजै।
देवो धिक बिन सांच सांच धिक धर्म न भावै। धर्म सुधि-
क बिन दया दया धिक अरि कहं आवै। अरि धिक चित्त।
न सालई चित धिक जहं न उदार मति। मति धिक के-
शव ज्ञान बिन ज्ञान सुधिक बिन हरि भगति ॥ ७ ॥ नक
लु क्रिया बिन बिप्र न कछु कायर जिय झत्री। न कछु नी-
ति बिन नृपति न कछु अस्सर बिन मंत्री। न कछु बाग बिन
धाम न कछु गृह बिन गरुवाई। न कछु कपट कोहेतु न
कछु सुख आप बड़ाई। न कछु दान सनमान बिन न क-
छु सुभोजन जासु दिन। नर सुनो सकल नरहर कहत नक
छु जन्म हरि भक्ति बिन ॥ ८ ॥ यद्यपि कुसंग संग लाभ त
द्यपि वह संग न किज्जिय। यद्यपि धनिक होय निधन त-
द्यपि घट प्रकृति न लिज्जिय। यद्यपि दान नहि प्राप्ति तद्-
पि सनमान न खुद्दिय। यद्यपि प्रीति उर घटै तद्यपि सुख
उधरन दुद्दिय। सुन सुयश दुवार किवाड़ दे कुयश ज-
गत न सुकिये। जिय जाय यद्यपि भलपन करत तऊन

भलपन चुक्कियै ॥ ९ ॥ तजहु जगत बिन भवन भवन तज त्रिय बिन कीनौ। त्रिय तज जनसुख देव सुखहि तजि सम्पति हीनौ। सम्पति तज बिन दान दान तज जहं न विप्र मति। विप्र तजहि बिन धर्म धर्म तजिये बिन भूपति। तज भूप भूमि बिन भूमि तज दीह दुर्ग बिन जो बसै। तज दुर्ग सुकेशव दास कवि जहां न पूरण जल लसै ॥ १० ॥ मूढ़ तपी सम कृती दुष्ट मानी गृहस्थ नर। नरनायक अति आलसी विपुल धनवंत कृपण कर। धर्मी दुष्ट सुभाव वेद पाठी अधर्मरत। पराधीन गुणवंत भूमिपालकनि देह सत। रोगी दरिद्र पीड़ित दुरूप दृढ़ नारि नर गृह चित। येते विडंब से सार में इन सबको धिक्कार नित ११। तियबल यौबन समय साधबल शिव पद सच्चर। नृपबल तेज प्रताप दुष्ट बल बचन अडंबर। निर्दूनबल सुमिलाप। दानसेवा याचक बल। वारिजबल व्योपार ज्ञानबल बर बिवेक दल। भूमिविद्या विनय उदार बल गुण समूह प्रभु बल दरव। परिवार सुबल सबिचार करहोंहि एक सम्मत सरव ॥ १२ ॥ नरपति मंडन नीति पुरुष मंडन मन धीरज। परिडत मंडन विनय ताल रस मंडन मीरज। कुलतिय मंडन लाजबचन मंडन प्रसन्न सुख। मति मंडन कवि कर्म साध मंडन। समाध सुख। भुजबल मंडन क्षमा गृहपति मंडन विपुल धन। मंडन सिध रुचि संत कहि काया मंडन बलन धन ॥ १३ ॥ ज्ञानवंत हठ गहै निधन परिवार बढ़ावै। बंदुआ। करै गुमान धनी सेवक ह्वै धावै। परिडत किरिया हीन। रांड़ दुर्बुद्धि प्रवानै। दृढ़ न समझेव धर्म नारि भर्तहिं रिपु मानै। कुलवंत पुरुष कुल विधि तजैं बंधु न मानैं बंधु हित। संन्यास धार धन संग्रहै ये जग में सूररव बिदित ॥ १४ ॥ गई भूमि फिरि मिलै बेलि फिरि जमैं जरेतें। फल फूलन तें फलैं फूल फूलंत झरेतें। केशव विद्या निकट बिकट बिसरी फिरि आवै। बहुरि होय धन धर्म गई सम्पति फिरि पावै। होय जो शील सुशील मति जगत हेतइमि

गाइये। धारागयेफिरिमिलै पै पतिन गई फिर पाइये॥१५॥ सर सरहँसन होत बाजि गजराज न दरदर। तरु तरु सुफल न होत नारि पतिव्रता न घर घर। तन तन सुमति न होत मोति जल बूंद न घन घन। फन फन मणि नहिं होत। सर्ब मलया नहिं बन बन। कहुं नर होंहिं न शूर सब नर नर होत न भक्त हर। नरहर सु कबि कवित्त किय सर्ब होहिं नहिं एक सर॥१६॥

अथ पहेली

इक नारी अरु पुरुष दै देर। सब से मिलैं एकही बेर॥ दिना चारका अंतर होय। लिपटै पुरुष छुड़ावै सोय॥१॥ कंघी॥ पानीमें निशिदिन रहै जाके हाड़ न मास। काम करै तरवारि को फिर पानीमें बास॥२॥ कुम्हारका डोरा॥ जलमें रहै झूठ नहिं भारवै बसै सु नगर मझार। कच्छ मच्छ दादुर नहीं पण्डित करो बिचार॥३॥ घड़ी॥ सोने की वह नारि कहावै। दाल चांवल के मोल बिकावै॥४॥ कंचनी॥ श्याम बरण परहरि नहीं जटा धरे नहिं ईश। नाजाने पिय कौन है पंरव लगाये शीश॥५॥ कसेरू बूझनखर अरु आधो नाम। अर्थ करो के छांड़ो गाम॥६॥ नीम॥ जल कर उपजै जलमें रहै। आंरवों देरवा खुसरो कहै॥७॥ काजल॥ शीश जटा पोथी गहै सेत बसन गलमाहिं। योगी जंगम है नहीं ब्राह्मण पण्डित नाहिं॥८॥ लहसन॥ श्याम बरण पीताम्बर कांधे मुरली धुनि नहिं होय। बिन मुरली वह नाद करत है बिरला बूझै कोय॥९॥ भौंरा॥ कर बोलै करही सुनै अवण सुनै नहिं ताहि। कहै पहेली बीरबल सुनिये अकबर शाहि॥१०॥ नाड़ी॥ बांबी वाकी जलभरी ऊपर जारी आग। जबै बजाई बांसुरी निकस्यो कारो नाग॥११॥ हुक्का॥ जाके रातन कोय फल पेड़हि देय जलाय। सोतर वर बहु फल्लियां देखो लोगो आय॥१२॥ भौचास्या। शीश केश बिन चुटिया तीन। अवगुण लेत पराये छीन।

जोइ जाय उनके दरवार। ताके मूह मरारवे बार ॥१३॥ त्रिवे-
णीरातपड़ै तब पड़ने लागी। दिनको मरी रैन को जागी। उस
का मोती नाम बताया। बूझौतुम मैं कूक सुनाया ॥१४॥ श्रो-
स॥ नर नारी हम एकै दीठे। ज्यों ज्यों बोलै त्यों त्यों मीठे। एक
न्हाय इक सेकन हारा। कह दुसरो नाहिं बीच नगारा ॥१५॥
नगारा॥ श्याम बरण अरु सोहनो फूलन छाई पीठ। सब पु-
रुषन के गल परत ऐसी लंगर ढीठ ॥१६॥ ढाल॥ शिरपर
सोहै गंगजल मुराड माल गल माहिं। बाहन वाको हय भई
शिव कहिये के नाहिं ॥१७॥ रहेट॥ रंग रंग इक पक्षी बना।
छोटी चोंच अरु काटे घना। तीस तीस मिल बिलमें बसैं।
जीव नहीं अरु उड़िकै बुसैं ॥१८॥ तीर॥ देखी एक अनोखी
नारि। गुण उसमें इक सब से भारि। पढ़ी नहीं अरु अचरज
आवे। मरना जीना तुरत बतावे ॥१९॥ नाड़ी॥ फाट्यो पेट
दरिद्री नाम। उत्तम घरमें वाको ठाम। श्रीको अनुज विषा
को सारो। परिडत होय सो अर्थ बिचारो ॥२०॥ शंख॥ नरके
पेट जो नारी बसै। पकड़ हिलावै खिल खिल हँसै। पेट फा-
ड़ि जब नारी गिरी। मोको लागी प्यारी खरी॥ २१॥ गिरी॥
बारे से वह सबको भावै। बढ़ा हुआ कछु काम न आवै। मैं
कहदीया उसका नाम। अर्थ करो कै छाड़ो गाम ॥२२॥ दी-
या॥ चहूं ओर फिर आई। जिन देखी तिन खाई ॥२३॥ खा-
ई॥ आधी बूबू सारी रानी। अर्थ करो कोउ पंडित ज्ञानी॥२४
॥ बूरानी॥ नारी एक सहर में सोई। सभी वस्तु वाके घर हो-
ई। खाय कछू नहिं पीवे पानी। लोग कहैं यह खरी दिवानी
॥२५॥ खारी। बावरी॥ बिना बुलाई खरचे दास। तन गो-
री औ अभरण श्याम। आवत ही परदेश सिधारी। पहुंची
जहां भई अति प्यारी। भरी गई रीती ह्वै आई। तब वह नारी
पुरुष कहाई ॥२६॥ हुंडी॥ अरबी कहो तो पाई ना। फा-
रसी कहो तो आई ना। हिन्दी कहत आरसी आवै। कहौं पहे-
ली कौन बतावै ॥२७॥ दर्पण॥ आदि काटे ते सबको पाले

मध्यकटेते सबको मारै॥ अंतकटेते सबको मीठा। सो खु-
सरोंमैं आंरवों दीठा ॥ २८ ॥ काजल ॥ पक्षी एक सेत औ ह-
स्यो। निशिदिन रहै ठामहीं पस्यो। ना कछु पीवै ना कछु खा-
य। अमृत बराबर दीखो जाय॥ २९ ॥ बकसुआ॥ एक ना-
री भौरे सी काली। कानन नहीं अरु पहिरे बाली। नाक नहीं
अरु सूंघे फूल। जेता अर्ज तेताही तूल॥ ढाल३०॥एक नारि
वह है बहुरंगी। घरसे बाहर निकसै नंगी। उस नारी काय
ही सिंगार। शिरपर नथनी मुंह पर बार॥ ३१॥ तलवार॥
डुलिदीजै। देखाकीजै॥ ३२॥ चिक॥ हाथमें लीजै। देखाकी-
जै॥ ३३॥ दर्पण॥ एक नारि कर तार बनाई। ना वह क्वारी
ना वह ब्याही। सूहे रंग सदा सी रहै। भावी भावी सब जग क-
है॥ ३४॥ बीरबहूटी॥ आधा भक्तन सुख बसै आधा गुरिा-
यन साथ। वाहि पसारी देतहैं पुंडी बांधके हाथ॥ ३५॥ हर
ताल॥ खेतमें उपजै सबको उखाय। घरमें होय तो घर ब-
हि जाय॥ ३६॥ फूट॥ लाग कहूं लागू नहीं बरजत लागै।
प्याय। कही पहेली एक मैं दीजै चतुर बताय॥ ३७॥ होंठ॥
लक्ष्मीपति के कर बसै पांच अक्षर के माहिं। पहिलो अक्ष-
र छोड़िकै सो दीजै तुम नाहिं॥ ३८॥ दर्शन॥ एक अचम्भा
देखो चल। सूखी लकड़ी लागो फल। जो कोई उस फलको
खाय। पेड़ छोड़ वह अंत न जाय॥ ३९॥ बरछी॥ योगी ए-
क मढ़ी में सोवै। मद पीवै अरु मस्त न होवै। जबहीं बालक का-
न में लागा। योगी छोड़ मढ़ी को भागा॥ ४०॥ गोला॥

अथ सुकरी

अर्द्ध निशा वह आयो भौन। सुंदरता बरनो काहि कौन।
निरखतही मन भयो अनंद। क्यों सखि सज्जन ना सखि चं-
द॥ १॥ घुलगई गांठ न खोले खुलै। जहां तहां मेरे संगहु-
लै। हिये विराजत होय न भार। क्यों सखि सज्जन नहिं स-
खि हार॥ २॥ दासी ते मैं मोल मंगायो। अंग अंग सब खो-
ल दिखायो। वासों मेरो भयो सुमेल। क्यों सखि सज्जन ना सखि

तेल ॥ ३ ॥ मैं अपनी मन दीनो रेन । सुन्दर रूप सुहावे बैन । दि गते कबहुं न करि हौं चूआ । क्यों सखि सज्जन ना सखि दूआ ॥ ४ ॥ वाबिन चित्त चहूं दिशि डोलै । चातक ज्यों पुनि पुनि पिय बोलै । छलय होय आवै नहिं गेह । क्यों सखि सज्जन ना सखि मेह ॥ ५ ॥ शोभा सदा बढ़ावनहारा । आंखन ते छिन होत न न्यारा । आठ पहर मेरो मन रंजन । क्यों सखि सज्जन ना सखि अंजन ॥ ६ ॥ रात दिना जाको है गौन । खुले हार आवै मेरे भौन । वाको हर्ष बताऊं कौन । क्यों सखि सज्जन ना सखि यौन ॥ ७ ॥ बाट चलत मेरो अंचरा गहै । मेरी सुने ना अपनी कहै । नाकछु मोसों झगड़ा झांटा । क्यों सखि सज्जन ना सखि कांटा ॥ ८ ॥ बाट चलत मैं पड़ा जु पाया । खोटा खरा नहीं परखाया । हाथ लगे तब होवे कैसा । क्यों सखि सज्जन ना सखि पैसा ॥ ९ ॥ देखन में यह गांव गठीला । चाखन में वह अधिक रसीला । मुख चूमौ तौ रस का भांड़ा । क्यों सखि सज्जन ना सखि गांड़ा ॥ १० ॥ सिगरी रैन मेरे संग जाग्यो । भोर भयेते बिछुरन लाग्यो । वाके बिछुरत फाटै हिया । क्यों सखि सज्जन ना सखि दिया ॥ ११ ॥ छूटे छुमासे सों घर आवै । आपहि लै अरु मोहिं हिलावै । नाम लेत आवै मोहिं शंका । क्यों सखि सज्जन ना सखि पंखा ॥ १२ ॥ निश दिन मेरे ऊपर रहै । दोऊ कुच लै गाढ़े गहै । उतरत चढ़त करत झक झोली । क्यों सखि सज्जन ना सखि चोली ॥ १३ ॥ सोंको तो हाथी का भावै । घट बढ़ होय तौ नाहिं सुहावै । दूढ़ दूढ़ कै त्याई पूरा । क्यों सखि सज्जन ना सखि चूरा ॥ १४ ॥ सिगरी रैन छाती पै राखा । उसका रस कस मैंने चाखा । भोर भया तब दिया उतार । क्यों सखि सज्जन ना सखि हार ॥ १५ ॥ हरितरंग मोहिं लागत नीको । वाबिन सब जग लागत फीको । उतरत चढ़त सिरोरत अंग । क्यों सखि सज्जन ना सखि भंग ॥ १६ ॥ लम्बे लम्बे डगोंजु आवै । सारे दिन की हौस बुझावै ॥ उठि कै चला तौ पकड़ा रबूंट । क्यों सखि सज्जन ना सखि ऊंट ॥ १७ ॥ दुर दुर करूं तौ दौड़ा आवै । रवन आंगन रवन बाहर जावै ।

देहरी दौड़ कहूं नहिं सुत्ता। क्यों सखि सज्जन नासखि कुत्ता १८
छोटा मोटा अधिक सुहाना। जो देखे सो होय दिवाना। कब-
हूं बाहर कबहूं अंदर। क्यों सखि सज्जन नासखि बंदर ॥१९॥
अति सुरंगहै रंग रँगीलो। है गुणवंत बहुत चटकीलो। राम
भजन बिनु कभी न सोता। क्यों सखि सज्जन ना सखि तोता ॥
२०॥ आठ पहर मेरे ढिगरहै। मीठी प्यारी बातैं कहै। श्याम ब-
रण अरु राते नयना। क्यों सखि सज्जन ना सखि मैना ॥२१॥
जब आवै तब जल भरलावै। तन मन की सब तपन बुझावै। म-
न का भारी तन का छोटा। क्यों सखि सज्जन ना सखि लोटा ॥
२२॥ धमक चढ़ै सुधिबुधि बिसरावै। दाबत जांघ बहुत सुख
पावै। अति बलवंत दिनन को थोड़ा। क्यों सखि सज्जन ना
सखि घोड़ा ॥२३॥ अति सुंदर जग चाहत जाको। मैंभी देख
भुलानी वाको। देखत रूप भया जो टोना। क्यों सखि सज्ज-
न ना सखि सोना ॥२४॥ निशिदिन आंगन ऊभो रहै। छांह
धूप सब ऊपर सहै। वाको देखे लगै न भूख। क्यों सखि
सज्जन ना सखि रूख ॥ २५ ॥

अथ हियहुलास

प्रथमहिं ताको सुमिरिये जिन दीन्हों गुरु ज्ञान। ज्ञानी गुण
गावै सदा ध्यानी धरै जु ध्यान ॥१॥ अम्बर थांभ्यो थंभ बिन
धरती अधर धराव। मनुष रूप ह्वै अवतर्यो देखत कलि को
भाव ॥२॥ भावित तीनौं लोक में नाहीं दूजो कोय। मनमें
निश्चय जानिये होनी होय सो होय ॥३॥ अब कछु बरणौं
तीनि रस रसही जग को जीय। रसना रस को यश कहै सुनि
सुख पावै हीय ॥४॥ हियहुलास या ग्रंथ को राख्यो नाम
बिचार। यामें सिगरे राग के रचे रूप शृंगार ॥५॥ आदि ना-
द अनहद भयो ताते उपज्यो वेद। पुनि पायो वा वेद में सक-
ल सृष्टि को भेद ॥६॥ प्राण पक्यो षट्राग सुनि तब उपज्यो वै-
राग। बारे तरु भे वृद्ध को तातें भावै राग ॥७॥ जग को धीरज रा-
गहै राग रूप की खान। तन मंजन सो रागहै राग प्रेम के प्रान ॥८॥

सुखको दाता राग है राग रूपको भोग। याही ते सब कहत हैं रा-
ग रंग सो योग ॥ ९ ॥ राग हरै सब रोगको राग चहै रस भोग। वि-
रही झूरै जुस जगको उपजै महा वियोग ॥ १० ॥

अथ राग रागनी नाम

भैरोंकी धुनि भैरवी बंगाली वैरारि। मधुमाध्वी अरु सिंध-
वी पांचौ बिरहिन नारि ॥ ११ ॥ दोड़ी गोरी गुन कली रक्तवा व-
तिको कव्व। मालकौसकी रागिनी गावत अति दुर्लव्व ॥ १२ ॥
रामकली पट मंजरी और कहौं देशाख। ये नारी हिंडोलकी
ललित बिलावल राग ॥ १३ ॥ देशी नट अरु कान्हड़ा के दारा
का मोद। दीपक की प्यारी सबै महा प्रेम परमोद ॥ १४ ॥ ध-
नासिरी आसावरी मारू बहुरि बसंत। सिरीरागकी रागिनी।
माल सिरी है अंत ॥ १५ ॥ भोपाली अरु गूजरी देशी कार मला
र। तनक वियोगिनि कामिनी मेघ रागकी नार ॥ १६ ॥

अथ राग गुण वर्णन

भैरों सुर सुरता कहै कोल्हू चलै सुधाय। माल कौस तब।
जानिये पहन पधिल जब जाय ॥ १७ ॥ चलै हिंडोलो आपतें सु-
नत राग हिंडोल। वर्षै जब घन धार अति मेघ राग के बोल ॥
१८ ॥ सिरीरागके स्वर सुनै सूखो वृक्ष हराय। दीपक दीपक
बर उठै कोऊ जाने गाय ॥ १९ ॥

अथ राग अलाप समय

पिछिले पहरे निशि समय भैरों राग बखान। माल कोश्री त-
ब गाइये जबलौं निकसै भान ॥ २० ॥ एक पहर दिन चढ़े तक
कह्यो राग हिंडोल। ठीक दुपहरी के समय दीपक के स्वर बोल
॥ २१ ॥ सिरीराग चौथे पहर जबलौं दिन अधियाय। मेघराग ज-
बहीं भलो जबै मेघ बरसाय ॥ २२ ॥ फागुन में ये राग सब जा-
गत आठौ याम। अष्ट याम में निशि समय एक याम विश्राम २३ ॥

अथ राग की ऋतु वर्णन

भैरों शरद कौशिक शिशिर और हिंडोल बसंत। दीपक।
ग्रीषम हेम श्री मेघ सुपावस अंत ॥ २४ ॥

अथ बाजे बरनि

जगमें सब सुरता कहैं बाजे साढ़े तीन। रबाल तार अरु फूंक पुनि अर्द्ध ताल सुरहीन ॥२५॥ रबाल नगारो ढोल डफ औरे परवावज जान। तार तंबूरा बीनहै बहुरि रबाव बखान ॥२६॥ फूंक नफीरी बांसुरी सर नाई कर नाम। ताल रबंजरी झांझ सब बाजे दिये बताय ॥२७॥

अथ गान आसन

बैठे आसन ऊंट को तब होय शुद्ध अलाप।
चलते लेटे स्वर भरै मानो महा कलाप ॥२८॥

अथ भैरों स्वरूप बरनि

भैरों शिव छवि शिर जटा सेत बसन तिर नैन। मुंडन की माला गले सिद्ध रूप सुख दैन ॥२९॥ सवैया ॥ शिव मूरत भैरों के भाव बन्यो तिर नेत्र सुराड की माल गले। षट सेत सबै तनमें पहरे हृदये भगवान को ध्यान धरे। तिरशूल विराजत है करमें सब भामिनि को मन लेत हरे। तन झार लगे दुति दूनि। भई चित चाहन में जिय जात छरे ॥३०॥

अथ रागिनी स्वरूप बरनि

शिव पूजन कैलाश पर दोऊ करमें ताल। सेत चीर अंगिया। अरुणा रूप भैरवी बाल ॥३१॥ भस्मपिटारी कर गहे हाथ लिये तिरशूल। बंगाली व्याकुल भई गई सबै सुधि भूल ॥३२॥ करणा फूल दुपहरिया कर कंकन शृंगार। शीशे के शा सोहत छु सेत बसन बैराग ॥३३॥ कंकन तन लोचन कमल नागरि महा अनूप। पियपै बैठी हँसति है मधु माध्वी यह रूप ॥३४॥ पुहुप बदन कानन धरे पहिरे बस्तर लाल। क्रोधवंत तिरशूल कर लिये सिंधवी बाल ॥३५॥

अथ माल कोशा स्वरूप बरनि

माल कोश नीले बसन सेत छड़ी है हाथ। मोतिन की माला गले सगरी सखियां साथ ॥३६॥ सवैया ॥ कौशिक की उपमा है भली तन गोरे बिराजत है पट नीलो ॥ माल गले कर

सेत छड़ी रस प्रेम छक्यो जिय छैल छबीलो ॥ नागरि रूप उजागर लै संग डोलत है सुरवसों गरबीलो ॥ कामिनि को मन मोहन है मन भावत रूप अनंग रसीलो ॥ ३७ ॥

अथ रागनी स्वरूपवर्णन

दोहा ॥ टोड़ी कर बीना गहे गावत पियके हेत । चंचल छवि मृग लोचनी पहिरे बस्तर स्वेत ॥ ३८ ॥ गोरी छवि अति सांवरी अम्ब पुहुप धर कान । तिरया तन तप कामकी गावत मीठी तान ॥ ३९ ॥ छुटे केश तन गुराकली बैठी पिय के पास । नीची ग्रीवा करि रही अतिही चित्त उदास ॥ ४० ॥ रवम्बावति गोरे बदन गावति कोकिल बैन । अति आतुर चातुर खड़ी कामवंत दिनरैन ॥ ४१ ॥ कोकब कामिनि निशामें जागै पिय के संग । रतिमाने के छीन तन अंग अंगमें रंग ॥ ४२ ॥

अथ हिंडोल स्वरूप वर्णन

दोहा ॥ पीत बसन हिंडोल के है जु हिंडोरे माहिं । सखी झुलावत चावसों गाय गाय सुसकाहिं ॥ ४३ ॥ सवैया ॥ कौन्ह बनाव महा छवि सुंदर भावत बैठ्यो हिंडोलहिं डोले ॥ झोक झुलावत और दुहूं तन गावति हैं सखियां सुरव रोले ॥ गोरो सो गात दिखात खरे मनो दामिनि सी दुति देखत सोले ॥ बस्तर पीतलिये रसरीति अनंग सों मोहैं हंसैमृदु बोले ॥ ४४ ॥

अथ रागनी स्वरूप वर्णन

दोहा ॥ रामकली नीले बसन कंचन सी सब देह । पिक बानी गावति खड़ी पियके प्रेम सनेह ॥ ४५ ॥ विरह भरी पट मंजरी मन मलीन तन छीन । सखी सीख दे अति देतिहै भई प्रेम आधीन ॥ ४६ ॥ पियके कर पर कर धरे अति व्यापै तन काम । तन दुर्बल दे आरवहै महा विरहिनी बाम ॥ ४७ ॥ पुलकित गर माला पुहुप सुंदर तरुणी जान । गोरी छवि बस्तर अरुण नयन काम के बान ॥ ४८ ॥ कामदेव को ध्यान धरि गावत गीत संगीत । करति शृंगार विलावलो लै लै बस्तर पीत ॥ ४९ ॥

अथ दीपक रागस्वरूपवर्णन

दोहा ॥ दीपक गज की पीठ पर बैठ्यो बागो लाल । मुक्त माल शोभित गरे चहुं दिश सिगरी बाल ॥ ५० ॥ सवैया ॥ दीपक को परताप बड़ो चढ़ि बैठ्यो गयंद की पीठ विराजै ॥ अम्बर राते शरीर सबै मुकतान की माल गले छवि छाजै ॥ संग सखी सब सोह निहैं तिन माहिं जो आप गयंद सो गाजै ॥ सांवरी रूपस्वरूप बन्यो दुति देखत दुःख सबै तन भाजै ॥ ५१ ॥

अथ रागनी स्वरूप वर्णन

दोहा ॥ देशी अति बिस्तर हरै काम सताई नार । पति कोठेल जगावती मिसकै बारम्बार ॥ ५२ ॥ अरुण बरण सिगरे बसन नट वासी नट नारि । दोऊ कांधे कर धरे पिय तन रही निहारि ५३ ॥ शीश पत्र गजदंत को करवाकी तरवारि । मोर कंठ के वरण है रूप कान्हरा नारि ॥ ५४ ॥ शीश जटा सब तन जटा गरे जनेऊ नाग । केदारो इह रूप है धरे ध्यान वैराग ॥ ५५ ॥ कामवंत का मोद है पीत बसन तन तास । अम्बा तरु बैठी हँसत पिछरी पिय को पास ॥ ५६ ॥

अथ श्री राग स्वरूप वर्णन

दोहा ॥ सिरी राग के कर कमल भूप रूप पट लाल । वर्ष अठारह के वरण गावत कंठ रसाल ॥ ५७ ॥ सवैया ॥ वर्ष अठारह को बरायो मुख देखत ही सब के मन भावै । बाम सबै वश कै अपने गुण गाय के भाव ते भेद बतावै ॥ रातो जो बागो बिराजत है कर वारिज फूल लिये मुसकावै ॥ भूप के रूप स्वरूप बन्यो सबही में भलो श्री राग कहावै ॥ ५८ ॥

अथ रागनी स्वरूप वर्णन

दोहा ॥ धनासिरी विरहिन बड़ी हृदय विहार अपार । सब तन पियरो ह्वै रह्यो निपट छीन तन वार ॥ ५९ ॥ चंदन टीको भाल पर गरे नाग को हार । छवि अति सुंदरि सांवरी आसावरी कुमार ॥ ६० ॥ मारू के माला गरे पिये प्रेम मदमात । तरुणी सुंदरि सांवरी बैठी अति अलसात ॥ ६१ ॥ मोर पक्ष शिर पर धरे बस्तर

पीत बसंत। कान फूल जो अस्वको चहुं दिश भ्रमर भ्रमंत।। ६२।। मालसिरी दुर्बल वदन सखी हाथ पर हाथ। चंद्र और पतिको तकति चहै मदन को साथ।। ६३।।

अथ मेघ राग स्वरूप वर्णन

दोहा।। श्याम बसन जो मेघ है गहे हाथ तरवार। अति आतुर चातुर खरो गावत सुरत बिचार।। ६४।। सवैया।। मेघ मलार महा अति सुंदर इंदर की छवि आप बन्यो है॥ पहिरे पट श्याम गहे तरवार जो माल गरे इहि भांति ठन्यो है।। जैसो जहां चहिये जोइ अंग सो तैसिये भांति सें आप धन्यो है।। काम को आतुर है अतिही तिय की रति को चित चाव बन्यो है।। ६५।।

अथ रागनी स्वरूप वर्णन

दोहा।। भूपाली विरहिन खरी केसर बोरे चीर। भयो बिरह की ज्वालतें पीरो सबै शरीर।। ६६।। विरह जरा तन गूजरी रोवत। छूटे केश। कामदेव कानन लगे तिनहिं दियो उपदेश।। ६७।। देश कार कंचन वरण खेलत पिय के संग। हिय हुलास है काम को चढ़्यो जो यौवन अंग।। ६८।। बीन गहे गावति बहुत। रोवति है नल दार। तन दुर्बल बिरहा दहे विरहिनि नारि मलार।। ६९।। सेज बिछाई कमल दल लेट रही मन मारि। लेत उसांस उसीपरी तनक वियोगिनि नारि।। ७०।।

इति श्री सभाविलास

समाप्तः



